

**पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय**

30-जनवरी-2019 16:13 IST

**गुजरात के सूरत में रसीलाबेन सेवन्तीलाल शाह वीनस अस्पताल के उद्घाटन अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ**

गुजरात के लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री विजयभाई, मंत्रिमंडल के साथी भाई किशोरभाई, संसद के हमारे साथी सी. आर. पाटिल, जरदोश बहन, मंच पर उपस्थित सभी महानुभाव, सेवन्तीभाई के परिवारजन, और मेरे लिए यह सौभाग्य की बात है की बहुत कम समय में मुझे गुजरात में दो आधुनिक हॉस्पिटल का उद्घाटन करने का सौभाग्य मिला।

अहमदाबाद में वी. एस. हॉस्पिटल के साथ में सरदार वल्लभभाई पटेल के नाम से एक अत्यंत आधुनिक अस्पताल का निर्माण हुआ है और जब से हमारे सेवन्तीभाई ने यह कारोबार संभाला है और सेवन्तीभाई का ऐसा है की वो चल रहे हैं... कुछ पता ही नहीं चलता। जितने साल से मैं उनको देख रहा हूँ उनमें एक ग्राम के वजन का भी फर्क नहीं पड़ा और उनके जीवन में मूल्यों की विशेषता है। जब मैं मुख्यमंत्री था और विदेश में डेलिगेशन जाते हो तो उसमें मेरा आग्रह रहता था की सेवन्तीभाई अगर साथ में रहे तो अच्छा और आते भी थे कई बार, लेकिन एक भी नियम में कभी भी समझौता नहीं करते, मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता है।

कुछ दिन पहले सेवन्तीभाई, उनके परिवारजन सभी दिल्ली आए थे और बहुत विस्तार से उन्होंने पूरे प्रोजेक्ट के बारे में बात की और उनका परिवार अब किस तरह से इसमें डूब चुका है और भविष्य की उनकी क्या योजनाएं हैं। उनका आग्रह था की मैं इस हॉस्पिटल में अवश्य आऊँ। सेवन्तीभाई के साथ का संबंध इतना पुराना है, इसलिए हम मना नहीं कर सकते। तो एक परिवार भाव की वजह से, आत्मीयता की वजह से, और मन में हमेशा आदर रहा है उनके लिए, उनके परिवारजनों के लिए।

व्यापार जगत, व्यवसायिक जगत में किसी भी प्रकार के मूल्यों में समझौता किए बिना व्यापार रोजगार भी अच्छे से हो सकता है, सेवा भी अच्छे से की जा सकती है, और समग्र परिवार को साथ में रखा भी जा सकता है- ये सारी चीजें सेवन्तीभाई के पास से देखने को मिलती हैं।

अस्पताल मैंने देखा, मुझे यह कहना पड़ेगा की सिर्फ सूरत को ही नहीं, पूरे गुजरात को आरोग्य क्षेत्र में एक नया नज़ारा मिला है। अभी तक उन्होंने पत्थर चमकाए, डायमंड बनाए और अब उनका मन नर सेवा, नारायण सेवा और हमारे यहाँ मंत्र है **“सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्”** इस भाव के साथ उन्होंने यह एक नई शुरुआत की है, मेरी तरफ से उनको अनेक अनेक शुभकामनाएँ हैं।

यह बात निश्चित है की किसी भी राष्ट्र की प्रगति में उनके नागरिकों का जीवन, चाहे वो शिक्षित हों, या स्वस्थ हों या उनकी क्षमता हो, उनका स्किल हो, उसके उपर निर्भर करता है। हमारा देश भी स्वस्थ बने, हमारा आने वाला कल स्वस्थ बने उसके लिए व्यापक योजनाएं लेकर के वर्तमान समय में भारत सरकार काम कर रही है। जन्म से लेकर बुढ़ापे तक हर कदम पर स्वास्थ्य के क्षेत्र में भारत सरकार का, राज्य सरकार का दखल है। कहीं न कहीं उसे सहायता देने की कोशिश है। व्यवस्था, सुविधा पहुँचाने का प्रयास है। प्रसूता माता.. श्रेष्ठ बच्चे के जन्म के लिए भी यह जरूरी है की माता स्वस्थ हो और पोषक आहार के लिए छ हजार रुपये इस गरीब गर्भवती माता को देने की व्यवस्था, ये जो बहुत बड़ा शिशु मृत्युदर और माता मृत्युदर को कम करने में सहायक बना है।

इतना ही नहीं, स्वस्थ मातृत्व योजना, उसके माध्यम से भी इंस्टिट्यूशनल डिलीवरी, क्योंकि हमारे यहाँ दाई और गाँव में जिस तरह चलता था उसमें कभी बच्चा मर जाता था, कभी माता मर जाती थी, और कभी माता और बच्चा दोनों ही की मृत्यु हो जाती थी। लेकिन अब इंस्टिट्यूशनल डिलीवरी की वजह से, हॉस्पिटल डिलीवरी की वजह से, अब इसकी संख्या भी घटती जा रही है और तुलना में मृत बालकों की संख्या भी कम होती जा रही है, स्वस्थ बच्चों के जन्म हो रहे हैं।

बच्चे के जन्म के बाद का सबसे बड़ा कार्य है टीकाकरण। टीकाकरण पहले भी होते थे और हमारी सरकार में भी हो रहे हैं। ऐसा नहीं है की टीकाकरण हमने ही शुरू किया है। ये तो श्रेयांसभाई को देखा इसलिए मुझे याद आया। लेकिन पहले टीकाकरण का जो दर हुआ करता था वो अत्यंत चिंताजनक हुआ करता था, बजट खर्च होता था, लोगों के टीए-डीए होते थे लेकिन टीकाकरण होता ही नहीं था। हमने एक इंद्रधनुष योजना बनाई और एक बहुत बड़ा कम्पेन चलाया और ज्यादा से

ज्यादा माताओं बहनों को इंद्रधनुष का लाभ मिले और पहले की तुलना में कई गुना टीकाकरण का काम व्यापक बना दिया है और जिसकी वजह से संतान और माता उनके भविष्य में कोई नई तकलीफें न हो उसके लिए एक रक्षात्मक व्यवस्था तैयार होती है।

जिस प्रकार हेल्थकेयर की व्यवस्था की आवश्यकता है उसी तरह प्रिवेन्टिव हेल्थकेयर भी उतना ही जरूरी है और प्रिवेन्टिव हेल्थकेयर में स्वच्छ भारत अभियान जो चलाया है, सैनिटेशन, मुझे याद है जिस दिन मैंने लाल किला पर से प्रधानमंत्री बनने के बाद सबसे पहले स्वच्छता की बात की थी तो कई लोगों ने मजाक उड़ाई थी की ये कैसा प्रधानमंत्री है। लाल किले पर से शौचालय बनाने की बात करता है। लेकिन आज, जब हम सरकार में आए तब देश में 38% कवरेज था और आज 98% तक पहुँच चुका है।

आप कल्पना कर सकते हैं। ये माताएँ बहनें कितना आशीर्वाद देती होंगी जिनको शौचालय के लिए सूरज उगने से पहले या फिर सूरज ढलने के बाद जाने के लिए राह देखनी पड़ती थी। उनको कितनी तकलीफ होती होगी। लेकिन यह सारी चीजें एक के बाद एक.. हेल्थकेर के क्षेत्र में.. कई लोगों को योग का मजाक उड़ाने में बड़ा मज़ा आया, कई टिकाएँ भी की, कई प्रकार की चीजें बोलीं, लेकिन आज वेल्नेस के लिए योग के महात्म्य को न सिर्फ भारत लेकिन दुनिया ने भी स्वीकार किया है। समग्र विश्व, यानि केवल हॉस्पिटल और दवा के डोज़, ऑपरेशन उतनी ही व्यवस्थाएँ नहीं अपितु प्रिवेन्टिव की दृष्टि से भी क्या किया जा सकता है, उस दिशा में हम आगे बढ़े हैं। अभी भारत ने आयुष्मान भारत योजना बनाई है, और जिस दिन आयुष्मान भारत की योजना हुई थी, अगर आप उस दिन का गुजरात समाचार निकाल कर देखेंगे, दूसरे अखबार भी देख सकते हो, टीवी भी देख सकते हो... आहाहा... ऐसे ऐसे मेरे बाल नोच लिए थे, पैसे कहाँ है और होगा कैसे और क्या होगा और ढिमका होगा फलाना होगा, कुछ छोड़ा ही नहीं था।

आज इतने कम समय में, सौ दिन तो अभी हाल ही में पूरे हुए हैं, ऐसे लोग जो जीवन में कल्पना भी नहीं कर सकते थे की अब इस बीमारी में कोई ओपरेशन हो सकता है या हाँस जा पाएंगे। सरकारी बड़े अस्पताल में भी जाने का जिसका सपना नहीं था। आज लगभग 70-75% प्राइवेट हॉस्पिटल और 25-30% सरकारी हॉस्पिटल, इतने कम समय में 10 लाख लोगों ने उसका लाभ लिया है और वो भी एक भी फूटी कौड़ी खर्च किए बिना और योजना का कवरेज 50 करोड़ लोगों के लिए है। ये दुनिया की सबसे बड़ी योजना है।

मध्यमवर्ग परिवार में भी एक भी इन्सान को बीमारी आती है तो पूरा परिवार बीमार हो जाता है और उसे मध्यमवर्ग से गरीबी में फिसल जाने में देर नहीं होती, और गरीब मानवी के घर में बीमारी आए तो पूरा परिवार तबाह हो जाए, जीना हराम हो जाए इतनी गंभीर परिस्थिति पैदा होती है। उसकी चिंता करने का काम आयुष्मान भारत योजना के द्वारा किया गया। पचास करोड़ लोगों को और पचास करोड़ यानी दुनिया की सबसे बड़ी योजना का मतलब क्या, अमेरिका, केनेडा, मैक्सिको - इन तीनों की कुल जनसंख्या जितनी है उतने लोगों को भारत में आयुष्मान भारत योजना का लाभ मिला है।

आज हर रोज देश में ऐसे गंभीर मुसीबतों में फँसे हुए परिवार जो की तीन तीन चार चार साल से मौत की राह देख कर बैठे हुए थे। औसतन दिन के 10 हजार लोग इस योजना का लाभ ले रहे हैं। और मैं देख रहा हूँ आने वाले दिनों में उसका लाभ बढ़ने वाला है और इसका एक बहुत बड़ा परिणाम ये आनेवाला है की देश में बड़े पैमाने पर टियर 2, टियर 3 शहर, चाहे बारडोली जैसे शहर हों या नवसारी जैसे हों पारडी जैसे हों - ऐसे शहरों में नए अस्पतालों की संभावनाएँ पैदा होने वाली हैं।

भारत के अंदर हेल्थ सेक्टर में प्राइवेट इन्वेस्टमेंट और प्राइवेट बिजनेस के लिए बड़ी संभावनाएँ पैदा होनेवाली हैं और उसकी वजह से बड़े स्केल पर मेडिकल कोलेज, बड़े स्केल पर हमारे अपने यूथ को मेडिकल एज्युकेशन के लिए व्यवस्थाएँ - एक पूरा नया इको सिस्टम खड़ा होनेवाला है और जिसका लाभ भारत को स्वस्थ बनाने की दिशा में बहुत अहम भाव रहेगा ऐसा मेरा विश्वास है और मुझे खुशी है की ये अस्पताल भी आयुष्मान भारत योजना के साथ जुड़ा हुआ है। गरीब से गरीब मानवी भी इस अस्पताल का लाभ ले सके और उसे जो कोई भी खर्चा होगा वो खर्चा भारत सरकार चुकाएगी उसके लिए भी व्यवस्थाएँ की गई हैं।

आने वाले दिनों में हेल्थ सेक्टर को मजबूत बनाने के लिए हम जेनरिक मेडिसिन की तरफ गए, जो दवाई, जिन लोगों को डायबिटीज होती है, हर घर में एक बुजुर्ग होता है, हर रोज़ उनको कोई न कोई दवाई लानी पड़ती है। संयुक्त परिवार हो, माता पिता बड़ी उम्र के हों, कोई न कोई हर रोज एक दवाई लानी पड़ती हो, जेनरिक दवाई का एक बड़ा अभियान चलाया, पांच हजार जेनरिक सेंटर्स खड़े किए, अभी और भी बढ़ाने की योजना है और जो दवाई 300 में मिलती हो वो 30 में मिले उसकी व्यवस्था कर दी गई है।

बहुत बड़े स्तर पर दवाई के पीछे के बोझ में कमी आए ऐसी अनेक दवाइयों की कीमत में कमी होती है। किसी में 70 प्रतिशत कमी, किसी में 50 प्रतिशत कमी, किसी में 40 प्रतिशत कमी, लेकिन सामान्य मानवी को सहायता मिले ऐसा

काम हुआ है। कठिन काम है, फार्मसी क्षेत्र के सभी लोगों को नाराज कर के करना पड़े ऐसा कम है, लेकिन फिर भी किया, क्योंकि वो सामान्य मानवी के लिए करना था।

हार्ट के ऑपरेशन हों , स्टेंट लगवाने हो, घुटने का ओपरेशन हो, 1 लाख, 1.5 लाख, 3 लाख इतने महँगे। इन कम्पनियों के साथ बातचीत कर के स्थिति ऐसी हो गई की कुछ चीजों की कीमत 30 प्रतिशत कर दी, 40 प्रतिशत कर दी गई। गरीब इन्सान को घुटने का ऑपरेशन करवाना हो या स्टेंट लगवाना हो उसके खर्चे में कमी कर दी गई। एक तरह से समाज जीवन की व्यवस्था के लिए आरोग्य के क्षेत्र में चाहे इन्फ्रास्ट्रक्चर का काम हो, चाहे प्रिवेन्टिव हेल्थकेयर का काम हो, चाहे मानव संसाधन विकास का काम हो, हम काम करते आए हैं।

हमारे यहाँ गुजरात में भी मैं जब मुख्यमंत्री था उस वक्त ये सब नेता भाषण करते थे, लेकिन उनके विरोध में कोई कुछ कहता नहीं था। हमारे यहाँ उमरगाम से अंबाजी तक आदिवासी पट्टे में साइन्स स्ट्रीम का एक भी स्कूल नहीं था। बोलिए, अब साइंस स्ट्रीम की स्कूल आदिवासी पट्टे में न हो तो मेडिकल कोलेज में विद्यार्थी जाएगा कैसे और मेडिकल का विद्यार्थी बनेगा कैसे और आरक्षण जो हुआ है, अनमता जो मिला हुआ है उसका लाभ भी नहीं ले सकते।

मैं मुख्यमंत्री बना उसके बाद यहाँ साइंस स्ट्रीम का स्कूल आदिवासी विस्तार में शुरू किया और उसमें से मेडिकल के अंदर बच्चे पढ़ने लगे और आज गुजरात के अंदर लगभग हर साल एक नए मेडिकल कॉलेज बनाने की दिशा में हम सफल रहे हैं। बच्चों के लिए जो सीटें थीं उस में भी बढ़ी मात्रा में वृद्धि की गई है, उसका फायदा भी गुजरात के बच्चों को मिला है।

कहने का मेरा तात्पर्य यह है की सर्वांगीण विकास के लिए जब हम काम कर रहे हैं तब एक महत्वपूर्ण फैसला, खास कर के सवर्ण समाज के अंदर एक जो आक्रोश, एक अपेक्षा और उस आरक्षण के मुद्दे पर काफी कुछ हो गया। बहुत ज्यादा हिम्मत कर के भारत के संविधान में हमने परिवर्तन किया है। और संविधान परिवर्तन के अलावा ये बात संभव होनेवाली नहीं थी यह बात हम डंके की चोट पर कहते थे, लेकिन कुछ राजनीतिक पक्ष अपने राजनीतिक हितों को पूरा करने के लिए इस बात को स्वीकार नहीं करते थे। आज हमने संविधान संशोधन किया और सवर्ण समाज के गरीब बच्चों को 10 प्रतिशत आरक्षण पक्का कर दिया और मैं गुजरात सरकार को बधाई देता हूँ की उसने सबसे पहले इसे अमली भी बना दिया।

शिक्षा में, नौकरी में सवर्ण समाज के गरीब परिवार को इसका लाभ मिलेगा और इस बात का भी ध्यान रखा गया की जिनको पहले से मिल रहा है उसमें से एक प्रतिशत की भी कमी नहीं आएगी। नई व्यवस्था खड़ी की गई और अवसर कम न हो इसलिए शिक्षा में 10 प्रतिशत सीटें बढ़ाने का भी फैसला ले लिया गया, जिससे की एक स्वस्थ विकास की दिशा पकड़ी जा सके। ऐसा एक मॉडल समाज में तनाव पैदा किए बिना खड़ा करने का हमने काम किया है।

समाज की सेवा के लिए शासन व्यवस्था का समर्पणभाव से उपयोग ऐसे ही एक भाव के साथ यह एक श्रेष्ठ काम चल रहा है। मैं आज सेवन्तीभाई का, उनके परिवारजनों का उनके इस साहस के लिए, उनके इस सेवा भाव के लिए, उनके इस समर्पण भाव के लिए हृदय से अभिनंदन करता हूँ और साथ ही अनेक अनेक शुभकामनाएँ भी देता हूँ और भारत सरकार की तरफ से भी मैं आश्वासन देता हूँ, विश्वास दिलाता हूँ की सेवा के इस काम में सरकार भी कंधे से कंधा मिलाकर के आपके साथ रहेगी।

बहुत बहुत धन्यवाद।

**एसएच/आर.के.मीणा/एम/मधूलिका/एस-158**

**पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय**

27-जनवरी-2019 17:18 IST

**प्रधानमंत्री द्वारा तमिलनाडु के मदुरै में एम्स के शिलान्यास समारोह में दिए गए भाषण का मूल पाठ**

मैं मीनाक्षी- सुंदरेश्वर मंदिर के लिए विख्यात और एक ऐसा स्थान, जिसका नाम भगवान शिव के शुभ आशीर्वाद से जुड़ा है- मदुरै में आकर प्रसन्न हूँ।

देश ने कल गणतंत्र दिवस मनाया। एक प्रकार से आज मदुरै में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान का शिलान्यास 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के हमारे विजन को परिलक्षित करता है।

मित्रों,

हम सभी जानते हैं कि दिल्ली में एम्स ने स्वास्थ्य देखभाल में अपने लिए एक ब्रांड नाम स्थापित कर लिया है।

मदुरै में एम्स के साथ हम यह कह सकते हैं कि स्वास्थ्य देखभाल के इस ब्रांड को अब देश के सभी कोनों में - कन्याकुमारी से कश्मीर से मदुरै और गुवाहाटी से गुजरात तक विस्तारित कर दिया गया है। मदुरै में एम्स का निर्माण 1600 करोड़ रुपये से अधिक की लागत के साथ किया जाएगा। इससे तमिलनाडु के सभी लोगों को लाभ पहुंचेगा।

मित्रों,

एनडीए सरकार स्वास्थ्य क्षेत्र को काफी प्राथमिकता दे रही है जिससे कि हर व्यक्ति स्वस्थ रहे और स्वास्थ्य देखभाल किफायती हो।

प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना के तहत हमने भारतभर में सरकारी चिकित्सा महाविद्यालयों के उन्नयन का समर्थन किया है।

आज मैं मदुरै के सुपर स्पेशिएलिटी ब्लॉक्स, तंजावुर एवं तिरुनेलवेल्ली चिकित्सा महाविद्यालयों का उद्घाटन कर प्रसन्न हूँ।

जिस गति एवं परिमाण से मिशन इंद्रधनुष कार्य कर रहा है, वह बचाव संबंधी स्वास्थ्य देखभाल में एक नया उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। प्रधानमंत्री मातृत्व वंदना योजना और प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान सुरक्षित गर्भावस्था को एक जन आंदोलन बना रहे हैं।

पिछले साढ़े चार वर्षों में पूर्व स्नातक मेडिकल सीटों की संख्या में लगभग 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। आयुष्मान भारत की शुरुआत भी एक बड़ा कदम है।

हमारे देश के लिए सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज की उपलब्धि सुनिश्चित करना हमारा एक सुविचारित दृष्टिकोण है। आयुष्मान भारत स्वास्थ्य समस्याओं के समग्र समाधान में पथ प्रदर्शक कदम उठाता है। व्यापक प्राथमिक देखभाल एवं बचाव संबंधी स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए वन प्वाइंट पांच लाख स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों की स्थापना की जा रही है।

प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना अस्पताल में भर्ती होने की स्थिति में 10 करोड़ से अधिक जरूरतमंद परिवारों को प्रतिवर्ष प्रत्येक परिवार पांच लाख रुपये तक की वित्तीय सुरक्षा उपलब्ध कराती है।

यह विश्व में सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा योजना है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि तमिलनाडु के 1 करोड़ 57 लाख व्यक्ति इस योजना के तहत शामिल हैं।

तीन महीनों की अवधि के भीतर ही लगभग 89 हजार लाभार्थियों को भर्ती किया गया और तमिलनाडु में भर्ती मरीजों के लिए 200 करोड़ रुपए से अधिक की राशि अधिकृत की गई है। मुझे यह जानकारी भी प्रसन्नता हुई है कि तमिलनाडु में पहले ही 1320 स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र आरंभ कर दिए हैं।

रोग नियंत्रण मोर्चे पर हम राज्यों को तकनीकी एवं वित्तीय सहायता प्रदान कर रहे हैं। हमारी सरकार 2025 तक तपेदिक उन्मूलन के लिए प्रतिबद्ध है। मुझे यह जानकारी प्रसन्नता हुई है कि राज्य सरकार तपेदिक मुक्त चेन्नई पहल को बढ़ावा दे रही है और 2023 तक ही राज्य से तपेदिक उन्मूलन की कोशिश कर रही है।

मैं राज्य के संशोधित राष्ट्रीय तपेदिक नियंत्रण कार्यक्रम के सभी पहलुओं के कार्यान्वयन की दिशा में उसकी प्रतिबद्धता के लिए सराहना करता हूं।

मैं आश्चर्य करता हूं कि भारत सरकार इन रोगों से निपटने में राज्य के प्रयासों को सभी आवश्यक सहायता देने के लिए प्रतिबद्ध है।

आज मैं तमिलनाडु में 12 डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्रों को समर्पित करके भी प्रसन्न हूं।

यह पहल हमारे नागरिकों के 'जीवन की सुगमता' को बेहतर बनाने का एक और उदाहरण है।

मैं एक बार फिर से आश्चर्य करना चाहता हूं कि हमारी सरकार सर्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज सुनिश्चित करने के लिए स्वास्थ्य देखभाल में उठाए गए कदमों को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

\*\*\*\*\*

हिन्दी इकाई, पसूका, नई दिल्ली -

**पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय**

17-जनवरी-2019 18:25 IST

**17 जनवरी, 2019 को एसवीपी अस्पताल, अहमदाबाद के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ**

भाईयो और बहनों,

केम छो,

नए साल में गुजरात का ये मेरा पहला दौरा है। आप सभी को एक बार फिर नववर्ष की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। ये त्यौहारों का समय है, आने वाले समय में अनेक त्योहार आने वाले भी हैं। उत्तरायन का पावन उत्सव आप सभी ने बड़े धूम-धाम से मनाया। गुजरात में एक और उत्सव कल से शुरू होने वाला है। Vibrant Gujrat इस साल यानी दुनिया भर से लोग यहां जुटे हैं, व्यापार और कारोबार की दुनिया के बड़े-बड़े नाम उनको गुजरात अब अपना लगने लगा है।

नए भारत की नई व्यवस्थाओं के कारण व्यापार और कारोबार में भी उत्सव का माहौल और यही तो गुजरात की विशेषता है।

साथियों, उत्सव का आनंद तब और अधिक आता है जब परिवार का सब सदस्य.. उनका स्वास्थ्य उत्तम रहता है। आज इसी दिशा में एक बहुत बड़ा कार्य संपन्न हुआ है।

आज अहमदाबाद के लिए, गुजरात के लिए एक बहुत बड़ी सुविधा को सौंपने का मुझे अवसर मिला है। मैं Ahmadabad Municipal corporation का आभारी हूं, गुजरात सरकार का आभारी हूं कि आपने मुझे मौका दिया।

750 करोड़ रुपये की लागत से बना सरदार वल्लभ भाई पटेल Institute of Medical Science of Research आपकी सेवा के लिए समर्पित है। इस विश्वस्तरीय अस्पताल के लिए मैं आप सबको बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

साथियों, देश सरदार साहब को एक कुशल प्रशासक, विजनरी नेता और किसानों के मसीहा के तौर पर जानता है लेकिन साथ-साथ सरदार साहब स्वच्छता और जन आरोग्य को लेकर भी बहुत आग्राही थे। इसी भावना के तहत उन्होंने अनेक स्वास्थ्य सुविधाओं के निर्माण में अपना योगदान दिया है। सरदार साहब की आत्मा जहां भी होगी, जिस शहर से उन्होंने अपना राजनीतिक दायित्व का प्रारंभ किया था उस शहर का इस प्रकार से फलना-फूलना, ऐसी बड़ी अस्पताल बनना... सरदार साहब जहां होंगे वहां उनकी आत्मा को जरूर शांति मिलेगी। और इस कार्य से जुड़े आप सबको सरदार साहब के अनेक-अनेक आशीर्वाद भी प्राप्त होते रहेंगे। ये मेरा विश्वास है।

अहमदाबाद में बना ये नया आधुनिक अस्पताल भी... मैं समझता हूं स्वास्थ्य सेवाओं की दुनिया में अपने आप में अपना एक महात्म्य बना हुआ है।

साथियों, इस अस्पताल का थोड़ी देर पहले मैंने निरीक्षण किया, मैं वाकई कहता हूं मैं मंत्रमुग्ध हूं और सच में और जब एक सपना सच होता है, अपनी आखों के सामने उसे देखने का मौका मिलता है, इतना संतोष होगा इसकी आप कल्पना भली-भांति कर सकते हैं।

2011-12 में जिस विषय की हम चिंता कर रहे थे तब भी न जाने कैसी-कैसी नकारात्मक बातें चलती थी बाजार में, कैसे-कैसे मनगढ़ंत आरोप लगते थे। लेकिन आज जो भी इसे देखेगा उसे जरूर संतोष होगा कि सामान्य मानव के जीवन में ऐसी व्यवस्थाओं का कितना महत्व होता है। और देश में शायद बहुत कम कॉरपोरेशन होंगे जो अपनी निर्धारित सेवाओं को जिम्मेवारी के अतिरिक्त, इस प्रकार की जिम्मेवारियों को संभालते हों और उसको उत्तम तरीके से, आधुनिक तरीके से दुनिया की बराबरी करने वाली व्यवस्था बनाते हों ऐसा बहुत कम नजर आता है।

और इसलिए Ahmadabad municipal corporation विशेष रूप से अभिनंदन के अधिकारी हैं, इस काम को करने वाले... जिन-जिनको जिम्मा मिला क्योंकि ये करीब 2012 से चल रहा है... जिन-जिनको जिम्मा मिला... जिन जिन लोगों ने अपना समय दिया, अपनी बुद्धि कौशल या सामर्थ्य को समर्पित भाव से लगाया, वे सभी अभिनंदन के अधिकारी हैं जिसके

कारण आज ऐसा उत्तम अस्पताल और ये सिर्फ गुजरात के लिए नहीं देश के अन्य राज्यों के लिए भी.. और मैं समझता हूँ ये वर्ल्ड क्लास अस्पताल के मुकाबले मैं अस्पताल है। यहां के कमरे हों, बैड हों या फिर ये पूरा कैम्पस। आधुनिकता और पर्यावरण का भी पूरा ध्यान रखा गया है। 15 सौ बैड की सुविधा वाला ये अस्पताल अहमदाबाद की स्वास्थ्य सुविधाओं को बहुत उचित स्तर पर ले जाने वाला है। ये यहां का पहला ऐसा सरकारी अस्पताल है जहां अपना हेलीपैड है, एयर एम्बुलेस को उतारने की सुविधा है,

साथियों, मुझे याद है कि 2000 से पहले तक गुजरात में न सिर्फ अच्छे सरकारी अस्पतालों का अभाव था बल्कि इनके लिए डॉक्टर और दूसरे मैन पावर की आवश्यकता होती थी उसकी भी बहुत बड़ी कमी थी।

सरकारी अस्पतालों में जाने से लोग बचते थे। और पहले अस्पतालों में इलाज करवाना सिर्फ साधन संपन्न लोगों के लिए ही बस में था वही कर पाते थे। और ये चीजें मन को पीड़ा कर जाती थी। इसी स्थिति को पीड़ा से बाहर निकालने के लिए सरकार ने अनेक नीतिगत फैसले लिए थे, हमने नए सरकारी अस्पताल बनवाए, नए मेडिकल कॉलेज बनवाए, और मेडिकल सीटों की संख्या बढ़ाने पर सबसे ज्यादा जोर दिया।

मुझे अब ये देखकर खुशी होती है कि आज गुजरात न सिर्फ गुजरातियों को बल्कि दूसरो राज्यों और दूसरे देशों के लोगों को भी बेहतर स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने में एक सक्षम इकाई के रूप में खड़ा हुआ है।

पिछले डेढ़ दशक से गुजरात में मेडिकल टूरिज्म भी बढ़ा है, अब विदेश से स्वास्थ्य लाभ के लिए लोग गुजरात आते हैं। और सरदार साहब के नाम पर बना ये अस्पताल अब यहां के हेल्थ सेक्टर को और ज्यादा मजबूती देगा। और सबसे अहम बात ये कि आयुष्मान भारत योजना से जुड़ने वाला ये एक और अस्पताल है।

आम तौर पर होता ये है कि इतने आलीशान, इतने भव्य अस्पताल में पैर रखने से भी गरीब घबराता है। वो मानता है कि इतनी चकाचौंध में इलाज तो बहुत मंहगा ही होगा। लेकिन मुझे बहुत संतोष है कि सरदार साहब को समर्पित इस अस्पताल में आयुष्मान योजना के तहत गरीब का मुफ्त में इलाज होगा।

भाईयो और बहनों आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना ये बहुत ही कम समय में गरीब से गरीब के भीतर स्वास्थ्य के संबंध में एक सुरक्षा का भाव जगाया है। आज देश के करीब 50 करोड़ गरीब भाई बहनों को ये विश्वास मिला है कि गंभीर बीमारी की स्थिति में सरकार उसके साथ खड़ी है। उसको अपना घर, जमीन, गिरवी रखने की जरूरत न पड़े, पैसा न भी हो..तो भी वो स्वस्थ हो सकता है। ये विश्वास आज हर गरीब को मिला है।

साथियों, कुछ लोग इस योजना को मोदी केयर भी कहते हैं, इसकी सफलता का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि सिर्फ सौ दिन के भीतर ही 60 लाख गरीबों का अस्पताल में मुफ्त इलाज सुनिश्चित हुआ है।

इस योजना तहत अब हर दिन एवरज-औसतन दस हजार गरीबों को मुफ्त इलाज मिल रहा है। अभाव के कारण वर्षों-वर्षों तक ये लोग, ये परिवार इलाज नहीं करवा पा रहे थे, अगर मुसीबत आ भी गई तो वो कहता है कि कितने दिन जीना है, परेशानी झेलेंगे, बच्चों को कर्ज के अंदर डुबोकर के नहीं जाता है। और परिवार के लोग पीड़ा सहते थे पर उपचार नहीं करवाते थे, क्योंकि संभव नहीं था। आज इनको आयुष्मान भारत का सहारा मिला है।

साथियों, देश के हर नागरिक का स्वास्थ्य बेहतर रहे, इसके लिए सरकार दिन-रात काम में जुटी है। सरकार का ये निरंतर प्रयास है कि देश के गरीब को, मध्यम वर्ग के परिवारों को कम-से-कम कीमत में उत्तम स्वास्थ्य सुविधाएं मिलें। इसके लिए केंद्र सरकार ने जेनरिक दवाओं को भी प्राथमिकता दी है। हमने प्रधानमंत्री जन औषधी केंद्र खोलने का एक अभियान चलाया है। अभी तक देश भर में करीब 5 हजार से ज्यादा केंद्र खोल जा चुके हैं। इन केंद्रों पर जेनरिक दवाएं मार्किट रेट से लगभग 50 प्रतिशत सस्ती हैं। जो दवाई एक हजार रुपये में आती है वो साढ़े तीन सौ, चार सौ, पांच सौ रुपये में मिल जाती है। इन केंद्रों से विशेष तौर पर उन परिवारों को लाभ हुआ है जिनको डायबिटीज जैसी बीमारियों के चलते नियमित रूप से दवाई लेनी पड़ती है। इतना ही नहीं सरकार ने बीते साढ़े चार वर्षों में साढ़े आठ सौ से अधिक दवाओं और सर्जरी के सामान की अधिकतम कीमत निर्धारित की है उससे ज्यादा नहीं ले सकते हैं और उसका परिणाम ये आया है कि आज सर्जरी का सामान हो, दवाईयां हों, ये सस्ते में उपलब्ध संभव हुई है।

भाईयो और बहनों हार्ट की बीमारी में काम आने वाले स्टेंट 85 प्रतिशत, तो घुटने की सर्जरी में काम आने वाले इंप्लांट करीब 70 प्रतिशत सस्ते हुए हैं। सिर्फ स्टेंट की कीमत कम किए जाने से ही गरीब और मध्यम वर्ग के लोगों को साल भर में साढ़े चार हजार करोड़ रुपये से भी अधिक की बचत हुई है। और इन्हीं प्लांट की कीमत कम होने से लोगों को सालाना लगभग 15 सौ करोड़ रुपये की बचत हुई है। इसके अलावा किडनी की बीमारी से पीड़ित बहनों भाईयो के लिए देश में लगभग साढ़े चार सौ दिनों में डायलिसिस सेंटर बनाए चुके हैं। इन सेंटरस पर मुफ्त में डायलिसिस की सुविधा दी जा रही

है। इसके पिछले वर्ष तक करीब 35 लाख मुफ्त डायलिसिस सेशन हो चुके हैं। इतना ही नहीं हर सेशन से किसी न किसी गरीब के लगभग दो हजार रुपये बच भी रहे हैं।

साथियों, बीजेपी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने देश के गांव-गांव तक प्राइमरी हेल्थ केयर सुविधाओं को बेहतर बनाने का बीड़ा उठाया है। आजादी के जब 75 साल होंगे, वर्ष 2022 तक, देश भर में डेढ़ लाख Health and Wellness Centre बनाने के लक्ष्य को लेकर आज भारत सरकार काम कर रही है।

इस पर गुजरात सहित सभी राज्यों ने तेजी से काम चल रहा है। यहां पर सामान्य बीमारियों की जांच तो होगी ही अनेक प्रकार के स्टैंट भी मुफ्त में उपलब्ध होंगे।

साथियों, बीते चार वर्ष में स्वास्थ्य सुविधाओं के साथ-साथ मेडिकल एजुकेशन भी उसका भी अभूतपूर्व विस्तार किया गया है। इस दौरान 18 हजार से अधिक एमबीबीएस और 13 हजार से ज्यादा पोस्ट ग्रेजुएट सीटें बढ़ाई गई हैं। मध्यम वर्ग के बच्चे जो हेल्थ सेक्टर में कैरियर बनाना चाहते हैं, उनके लिए बहुत बड़ा अवसर पैदा हुआ है। यहां गुजरात में भी हजारों नई सीटें जोड़ी गई हैं। देश के हर तीन संसदीय क्षेत्र में कम से कम एक मेडिकल कॉलेज खोलने की योजना पर काम चल रहा है।

साथियों, स्वास्थ्य पर इतना जोर दिया जाने की वजह से निजी अस्पतालों के नेटवर्क का भी विस्तार हो रहा है। आयुषमान भारत जैसी योजना के कारण छोटे-छोटे कस्बों में भी जरूरत बढ़ रही है। लिहाजा नए अस्पताल भी तेजी से खुल रहे हैं।

नए अस्पताल खुल रहे हैं तो डॉक्टरों, नर्सों और दूसरे पैरामेडिकल स्टाफ की भी मांग बढ़ रही है। यानी युवाओं के लिए रोजगार के अनेक अवसर हेल्थ सेक्टर में आने वाले समय में बनने वाले हैं।

भाईयो और बहनों, जब रोजगार और युवाओं को अवसरों की बात आती है तो ... हाल में सरकार ने एक बहुत बड़ा फैसला लिया है। सामान्य श्रेणी के गरीब बच्चों को सरकारी सेवाओं के साथ-साथ, सरकारी और निजी शिक्षण संस्थानों में 10 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान संविधान में किया गया है।

मैं गुजरात सरकार को बधाई देता हूं कि आपने सबसे पहले इसको लागू किया है। अब तो केंद्र सरकार सहित अनेक राज्य सरकारों ने इसको लागू करने के आदेश जारी कर दिए हैं।

साथियों, जाति, वर्ग, संप्रदाय से ऊपर उठते हुए सामान्य वर्ग के गरीबों को आरक्षण की मांग तो.. दशकों से चल रही थी। लेकिन राजनीति की इच्छा शक्ति की कमी, चुनाव-चुनाव के दौरान, राजनीतिक दल ये तीर फेंक दिया करते थे। लेकिन संविधान संशोधन की प्रक्रिया होती थी, वो करने की हिम्मत इनमें नहीं थी, लेकिन केंद्र की एनडीए सरकार ने ये इच्छा शक्ति दिखाई, हमने करके दिखाया।

मैं फिर कह रहा हूं कि आरक्षण की व्यवस्था से, ये जो व्यवस्था हमने की है, ये बाकि किसी भी वर्गों के हक को छेड़े बिना की गई है। यानी इससे सामाजिक समरसता के नए द्वार खुलेंगे, जो गिले-शिकवे पहले रहते थे वो इससे दूर होंगे।

साथियों, केंद्र सरकार ने ये फैसला भी किया है कि शिक्षण संस्था में इस नए आरक्षण का लाभ इसी साल नए सेशन से मिलेगा। देश की नौ सौ युनिवर्सिटी, और लगभग 40 हजार कॉलेजों पर ये आरक्षण लागू हो जाएगा।

इसमें Technical, Non-Technical, Management हर प्रकार की संस्थाओं में ये व्यवस्था लागू हो जाएगी। इसके लिए जल्द ही जरूरी आदेश जारी हो जाएगा। इतना ही नहीं, नई व्यवस्था का मौजूदा स्थितियों पर असर न पड़े इसके लिए संस्थानों में सीटों की संख्या भी 10 प्रतिशत बढ़ाई जाएगी।

भाईयो और बहनों हमारी सरकार देश में अवसरों की समानता के प्रति प्रतिबद्ध है। नए भारत की शक्ति हमारी युवा शक्ति है, युवा शक्ति अपनी ऊर्जा का सही उपयोग तभी कर पाएगा जब उसको उपयुक्त अवसर मिलेंगे। अवसरों में भेद-भाव से प्रतिभा पर असर पड़े, ये बातें पुरानी कर दी हैं। समानता के लिए बीजेपी का समर्पण हमारे संस्कारों से, हमारी संगत से जुड़ा है। हमें पता है कि गरीब का संघर्ष क्या होता है। और इसलिए हम पूरी निष्ठा के साथ समाज के हर क्षेत्र में समान अवसरों के लिए प्रतिबद्ध है।

भाईयो और बहनों, अवसरों के अभाव में कोई पीछे न रहे, मध्यम वर्ग हो या गरीब, शहर हो या गांव, देश का कोई वर्ग, कोई भी कोना विकास से न छूटे, इसके लिए सरकार लगातार काम कर रही है। यही सबका साथ-सबका विकास है। और यही न्यू इंडिया के निर्माण के लिए हमारा रास्ता है। हम सभी को मिलकर इस रास्ते पर पूरी रफ्तार से चलना है। इसी आग्रह के साथ मैं एक बार फिर आप सबको इस नई स्वास्थ्य सेवाओं के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूं लेकिन अस्पताल



के उद्घाटन में ये तो नहीं कह सकते कि अस्पताल भरा रहे। मैं तो चाहूंगा कि ऐसी स्थिति न आए, किसी को अस्पताल आना ही न पड़े लेकिन अगर आना पड़े तो पहले जब आए थे, पहले थे उससे ज्यादा अच्छे बनकर के जाएं, ये मेरी आप सबको शुभकामना है। बहुत-बहुत धन्यवाद, फिर से एक बार Ahmadabad Municipal corporation को उनके इस सफल प्रयास के लिए अनेक-अनेक साधुवाद देता हूँ। धन्यवाद।

\*\*\*

अतुल कुमार तिवारी, शाहबाज हसीबी, ममता

प्रधानमंत्री कार्यालय

# अहमदाबाद में नए सिविल, कैंसर और नेत्र अस्पतालों के उद्घाटन समारोह में प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 04 MAR 2019 10:25PM by PIB Delhi

सबसे पहले आप हमारे देश के वीर जवानों के नाम अपना मोबाइल फोन निकाल करके, इसकी बैटरी फ्लैश चला करके हम वीरों का सम्मान करेंगे। हर किसी के मोबाइल फोन की बैटरी, और उसको चालू रखिए। मैं तीन जयकारा बुलवाऊंगा। आप सबको, आप भी, आप सबको भी तीन जयकारा बोलना है। ये भारत माता के जयकारे हैं-

पराक्रमी भारत के लिए-

भारत माता की – जय

विजयी भारत के लिए-

भारत माता की – जय

देश के वीर जवानों के लिए-

भारत माता की – जय

बहुत-बहुत धन्यवाद आपका।

यहां पधारे हुए सभी उत्साही प्यारे भाइयो और बहनों।

मन करता है आज बहुत कुछ बता दूं। आज अहमदाबाद के विकास के लिए, यहां के जन-जन के लिए ऐतिहासिक दिन है। थोड़ी देर पहले अहमदाबाद मेट्रो के पहले फेज़ का लोकार्पण हुआ है और साथ-साथ दूसरे फेज़ का शिलान्यास भी हुआ है। और अभी यहां पर अहमदाबाद की ही नहीं, बल्कि गुजरात की, देश की एक बहुत बड़ी स्वास्थ्य सुविधा का लोकार्पण किया गया है। अहमदाबाद के जीवन को बदलने वाले इन projects के लिए मैं आप सबको बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

साथियो, आप ही की तरह आज मेरा भी बरसों पुराना सपना पूरा हुआ है। यहां आने से पहले मैंने अहमदाबाद मेट्रो में सफर किया। उस दरम्यान लोगों का उत्साह और उनको खुशी का अनुभव किया, सच में मन आनंद से भर गया। उत्तरायण में जैसे लोग छत पर हो करके पतंग उड़ाते हैं, वैसे ही आज छत पर खड़े होकर लोग अपनी मेट्रो का स्वागत कर रहे थे। पूरे रास्तेभर शायद ही कोई छत ऐसी हो, जिस पर लोग न जमे हुए हों। मेट्रो अहमदाबाद-वासियों का बहुत बड़ा सपना, वो आज हकीकत में बदल गया है।

साथियो, पहले चरण पर तो मेट्रो चल पड़ी है, दूसरे चरण का शिलान्यास भी आज हो गया है; एक काम खत्म और दूसरे पर काम शुरू, ये भी हमारी सरकार की और एक विशेषता है। एक हो जाए तो हम सोते नहीं हैं, दूसरे के लिए तैयारी करते हैं।

आप क्या समझे, मैं क्या कह रहा था? अपने-अपने हिसाब से मतलब निकालना सिर्फ कांग्रेस को ही आता है, आप ऐसा मत कीजिए। दस हजार करोड़ रुपये से ज्यादा की लागत से बन रही इस मेट्रो से अहमदाबाद के लोगों के जीवन में बड़ा बदलाव आने वाला है। लाखों अहमदाबादियों को इसका लाभ होने वाला है। कल्पना कीजिए दफ्तर जाने वाले साथियों को, यहां के उद्यमियों को, स्कूल-कॉलेज जाने वाले विद्यार्थियों को कितनी राहत मिलने वाली है, समय की कितनी बचत होने वाली है। इससे अहमदाबाद में ट्रैफिक से जुड़ी समस्याएं तो कम होगी हीं, पर्यावरण का नुकसान भी कम होगा। और हमारा आप जानते हैं पुराना मंत्र- जिसका शिलान्यास हम करते हैं उसका उद्घाटन भी हम ही करते हैं। इसका मतलब क्या हुआ? नहीं, इसका मतलब क्या हुआ? इसका मतलब क्या हुआ? इसका मतलब ये हुआ कि आज जो मेट्रो का शिलान्यास किया है, तीन-चार-पांच साल, जब भी उसका काम पूरा होगा, हम मौजूद होंगे। और ये सब कैसे हो रहा है- आपके आशीर्वाद से हो रहा है।

साथियो, देश को ट्रांसपोर्ट की ये सुविधा देने के लिए हमारी सरकार कितनी गंभीरता से कार्य कर रही है, इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि साल 2014 तक... ये आंकड़ा याद रखना... कुछ बुद्धिमान लोग आंकड़े भूल जाते हैं। मेरे जैसे सादे-सीधे व्यक्ति की तरह आप भी याद रखिए। 2014 के पहले जब रिमोट कंट्रोल सरकार चलती थी; 2014 तक देश में मेट्रो का नेटवर्क सिर्फ पूरे देश में 250 किलोमीटर था। अब स्थिति ये है कि देश में मेट्रो का ऑपरेशनल नेटवर्क... और 55 महीने का एक हिसाब दे रहा हूं मैं... आज करीब-करीब 650 किलोमीटर तक पहुंचा है। कहां 250, रिमोट कंट्रोल वाली सरकार और कहां 650, 55 महीने में। और इतना ही नहीं, देश के अलग-अलग हिस्सों में करीब 800 किलोमीटर मेट्रो रूट पर आज काम चल रहा है। सोचिए, आने वाले समय में urban transport कितना ज्यादा बदलने जा रहा है।

साथियो, अब से कुछ देर पहले मैंने एक common mobility card का भी शुभारंभ किया है, देश को अर्पण किया है और मेरी दृष्टि से आज अहमदाबाद को तो जो मिला, सो मिला; गुजरात को जो मिला, सो मिला, लेकिन इस कार्यक्रम से मैं पूरे हिन्दुस्तान को एक नई सौगात दे रहा हूं। और आपको भी उसकी बारीकी जान करके खुशी होगी। और ये जो रूपे कार्ड है, उसी से चलने वाला काम है। ये कार्ड यात्रा करते समय आपकी तमाम दिक्कतों को दूर करने जा रहा है। देशभर में लोग मेट्रो से जाते हैं, बस से जाते हैं, लोकल ट्रेन से जाते हैं; टोल का पैसा देते हैं, पार्किंग का पैसा देते हैं, भांति-भांति जगह पर पैसे देने पड़ते हैं। और इसमें आपको अक्सर बटुए से निकालकर पैसे देने होते हैं। कई बार खुले पैसे होते हैं, कई बार नहीं होते हैं। इसमें कितनी तरह की दिक्कतें आती हैं, समय जाता है; ये भी आपको भलीभांति पता है।

इस दिक्कत को दूर करने के लिए ही automatic fare collection system की व्यवस्था विकसित की गई है। लेकिन इसमें भी एक चैलेंज ये था कि ये सिस्टम भारत को विदेश से ही मंगवाना पड़ता था। अलग-अलग कम्पनियों द्वारा बनाए गए सिस्टम की वजह से देश में एक integrated व्यवस्था विकसित नहीं हो पा रही थी। यानी एक शहर का कार्ड दूसरे शहर में नहीं चलता था, बेकार हो जाता था। इस चुनौती को दूर करने के लिए हमारी सरकार ने एक व्यापक स्तर पर एक task force बना करके टेक्नोलॉजी की

दृष्टि से एक नया achievement करने के लिए काम शुरू किया। अनेक मंत्रालयों, अनेक विभागों को इस काम में लगाया गया। बैंकों को भी जोड़ा गया। सरकार ने उन्हें एक ही task दिया था, एक ऐसी व्यवस्था विकसित करें जो अलग-अलग कार्ड बनवाने की इस दिककत को दूर करे और डिजिटल लेनदेन को आसान बनाए।

साथियो, तमाम प्रयासों के बाद अब देश में... अब आपको खुशी होनी चाहिए...अब देश में one nation one card. One nation one card का सपना अब साकार हो गया है। Common mobility card से आप पैसे भी निकाल पाएंगे, शॉपिंग भी कर पाएंगे और देशभर में...सिर्फ अहमदाबाद नहीं.... देश के किसी भी मेट्रो या ट्रांसपोर्ट के अन्य साधन में भी आपका वो ही रूपे कार्ड काम में आएगा। अगर मैं और आसान शब्दों में समझाऊं- तो अब आपके रूपे डेबिट कार्ड और mobility card को मिलाकर एक किया जा रहा है।

साथियो, इस व्यवस्था के साथ ही अब विदेशी तकनीक पर भारत की निर्भरता खत्म हो गई है, अब जो कुछ भी है वो Made in India है। अब भारत दुनिया के उन कुछ इने-गिने देशों की लिस्ट में शामिल हो गया है जिनके पास इस तरह की तकनीक है और जो अपने ट्रांसपोर्ट सिस्टम में One nation one card की व्यवस्था को लागू करने जा रहा है। देश के हर युवा को गर्व होगा कि हमारे नौजवानों ने अपने ही देश में बनी हुई ये तकनीक आज देश को समर्पित की है। मैं देश को और आप सभी को इसके लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूं। वैसे गुजरात के लिए भी ये गर्व की बात है कि यहां बड़ोदरा के सावली में जो मेट्रो के कोच बन रहे हैं वो अब एक्सपोर्ट भी किए जा रहे हैं।

साथियो, ट्रांसपोर्ट सेक्टर को मजबूत करने के लिए आज...अभी आपने देखा होगा मैं हरी झंडी से ट्रेन को विदा कर रहा था। आज पाटन-भीलड़ी नई रेल लाइन का उद्घाटन और आणंद-गोधरा की रेलवे लाइन के दोहरीकरण का शिलान्यास भी किया गया है। मैं छोटा था, हर एमपी पाटन-भीलड़ी रेलवे लाइन की बात करता था। बचपन से मैं सुनता आया था, पहली बार ये काम हुआ। आप बताइए कैसे चला होगा पहले?

साथियो, आज से दो दशक पहले गुजरात जिस स्थिति में था, वो आज की नई पीढ़ी को शायद ही पता होगा। हालत ये थी कि राज्य के बहुत से इलाके पानी के लिए तरसते थे, इलाज के लिए लोगों को शहर-शहर भटकना होता था, 24 घंटे बिजली एक सपने की बात थी। ज्यादातर इलाकों में जीना इतना कठिन था कि लोग पलायन करने पर मजबूर थे। विशेषकर मेरे आदिवासी भाई-बहनों को तो कोई पूछने वाला ही नहीं था। अब आज गुजरात जहां है, वो गुजरात में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के परिश्रम का परिणाम है। कुछ ही वर्षों में गुजरात के लोगों ने अपने गुजरात की तस्वीर बदल दी है।

भाइयो और बहनों, गुजरात के विकास को और ऊंचाई देने वाले, गुजरात के संतुलित विकास के लिए हमारी सरकार चाहे केन्द्र में हो या राज्य में हो, हम चौतरफा विकास के काम करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। बीते 55 महीनों में सरकार ने उमर गांव से अम्बाजी तक, यानी राज्य की पूर्व पट्टी; आदिवासी बाहुल्य इलाका उमरगांव से जाखोर, यानी हमारे समुद्री तट वाला तटीय इलाका और आबू से दहानू तक, राजस्थान से महाराष्ट्र तक ये हमारे गुजरात का मध्य पूरी पट्टी, यानी केन्द्रीय गुजरात की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विकास के अनेक कार्य शुरू किए हैं। और एक बड़ा उसका planning करके किया है।

पूर्व में आदिवासी पट्टी, पश्चिम में आदिवासी लोग और बीच में हमारा अहमदाबाद-बड़ौदा-पालनपुर, वाप्ती-ताप्ती सब। अगर मैं पहले उमरगांव से अम्बाजी की बात करूं तो सरकार ने इस क्षेत्र में आदिवासी भाई-बहनों के जीवन को आसान बनाने पर विशेष जोर दिया। इस क्षेत्र के सभी गांवों को all weather connectivity दी जा चुकी है। यहां पानी की समस्या को दूर करने के लिए 2800 करोड़ रुपये की water supply योजना पर काम चल रहा है। नर्मदा जल पर आधारित दाहोद-छोटाउदयपुर water supply scheme हो, नर्मदा और तापी जिले के लिए पेयजल परियोजना हो, मयसागर जिले के लिए कड़ाना बांध पर आधारित water supply scheme हो या फिर संखेड़ा-पावीजीत पुर रीजनल water supply scheme हो, इसका लाभ उमरगांव से अम्बाजी बेल्ट के लाखों लोगों को मिला है। इस क्षेत्र में डेयरी उद्योग को बढ़ावा देने का प्रयास भी किया जा रहा है। साबरकांठा में इजरायल के साथ मिलकर आधुनिक एग्रीकल्चर सेंटर पर भी काम हो रहा है।

साथियों, सरकार के प्रयासों की वजह से आज गुजरात के पूरे आदिवासी इलाके कीसिकल सेल एनीमिया की जांच के लिए स्क्रीनिंग की जा चुकी है। इससे आदिवासी लोगों को तमाम चुनौतियों से निपटने में मदद मिल रही है। सरकार ने आदिवासी बच्चों की शिक्षा पर भी विशेष ध्यान दिया है। आप जान करके हैरान हो जाएंगे इतनी बड़ी-बड़ी बातें करने वाले लोग, बड़े-बड़े वादे करने वाले लोग गुजरात के आदिवासी क्षेत्र में, एक भी तहसील में जब तक मैं मुख्यमंत्री नहीं बना, तब तक एक भी XII Science की स्कूल नहीं थी बताइए। 2001 तक आदिवासी पट्टी में एक भी tribal बच्चों के लिए XII Science की स्कूल नहीं थी। आज वहां मेडिकल कॉलेज बन रहे हैं, यूनिवर्सिटियां बन रही हैं। विकास कैसे होता है, सपने कितने बड़े होते हैं और संकल्प को ले करके कैसे सिद्धि प्राप्त की जा सकती है, गुजरात एक case study का विषय है दोस्तों।

दीनबंधु कल्याण योजना के तहत सैंकड़ों मॉडल आवासीय स्कूल, आश्रम स्कूल, एकलव्य स्कूल बनाए गए हैं। 1100 से ज्यादा होस्टल का भी निर्माण हुआ है, जिसका लाभ दो लाख से ज्यादा आदिवासी बच्चों को मिल रहा है। इतना ही नहीं, नर्मदा जिले में 300 करोड़ रुपये की लागत से birasamundatribal university की भी स्थापना की गई। सरकार द्वारा आदिवासी विद्यार्थियों के लिए स्पेशल कोचिंग क्लासेज भी चलाई जा रही हैं। पहले आदिवासी छात्रों के लिए रिजर्व मेडिकल सीट खाली चली जाती थी, अब लगभग सभी सीटें भर रही हैं।

दाहोद और पालनपुर में बनाए गए मेडिकल कॉलेज से इस इलाके में स्वास्थ्य सुविधा भी बहुत मजबूत हुई है। सरकार दाहोद के रेलवे वर्कशॉप के विस्तारीकरण पर भी काम कर रही है। अभी आपने टीवी पर देखा होगा, हमारे जसवंत सिंह जी भामोर वहां रेलवे के यार्ड में थे और मैं यहां से उसको रिमोट से चालू कर रहा था। दाहोद रेलवे वर्कशॉप की क्षमता दाहोद में एक परेल करके जगह है, मैं कभी उन जंगलों में काम करता था, जब बहुत 30-40 साल पहले की बात है, ऐसे ही वीरान पड़ा था रेलवे का पूरा इलाका।

हमने अब इसको फिर से जिंदा कर दिया और उसकी वर्कशॉप की क्षमता में चार गुना बढ़ोत्तरी की गई है, ताकि यहां के लोगों को रोजगार मिले। अब तक वहां मालगाड़ी के सिर्फ साढ़े चार सौ वैगनों की overhauling की जा सकती थी, अब इस क्षमता को साल में 1800 वैगन तक पहुंचा दिया गया है। अब आप कल्पना कर सकते हैं कि एक दिन में 6 वैगन का काम, यानी कितने लोगों को रोजगार मिलेगा।

इसके अलावा सरकार पर्यटन से जुड़ी सुविधाओं को भी विकसित कर रही है। केवड़िया में Statue of Unity सरदार वल्लभ भाई पटेल का यहां स्मारक, दुनिया का सबसे ऊंचा Statue है। Statue of Liberty से उसकी height डबल है। ये भी गुजरात कर सकता है और उस Statue of Unity के दर्शन के लिए देशभर में कितना उत्साह है, ये आप भलीभांति जानते हैं। अम्बाजी में भी विकास से जुड़ी अनेक परियोजनाएं जारी हैं। इसी तरह सरकार राजपिपला में tribal museum पर भी तेजी से काम करवा रही है।

भाइयो और बहनों, स्वतंत्रता के आन्दोलन में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाले आदिवासी समूह को वो सम्मान नहीं मिला था, जिसके वो हकदार थे। Tribal Museum बनवाकर सरकार आदिवासियों ने आजादी के जंग में जो योगदान दिया, उसके प्रति लोगों को जाग्रत करने का काम कर रही है।

साथियो, गुजरात की सामुद्रिक ताकत से दुनिया भलीभांति परिचित है। उमरगांव से लेकर जखोर कच्छ में तक पूरा क्षेत्र हिन्दुस्तान का सबसे लम्बा समुद्री तट गुजरात के पास है, आज भी हमारी सामुद्रिक ताकत को बढ़ाता है। इस इलाके के विकास के लिए अनेक परियोजनाओं पर काम किया जा रहा है। गोगा से दहेज के बीच रोरोफेरी चलाने से लोगों के लिए आना-जाना आसान हुआ है और उनके समय और पैसे की भी बचत हो रही है।

सोनी योजना पर आधारित सिंचाई और पेयजल परियोजनाओं ने इस इलाके में पानी का संकट काफी हद तक कम किया है। अब सरकार ने समुद्री जल से साफ पानी निकालने की योजनाओं को भी गति दी है। जोड़िया समेत छह और जगहों पर distillation का काम शुरू हो रहा है। इस पूरी coastal belt के विकास के लिए यहां की connectivity सुधारने के लिए सरकार ने सागरमाला कार्यक्रम के तहत 75 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा की परियोजना स्वीकृत की है। अकेले गुजरात के समुद्री तट पर 75 हजार करोड़ रुपया। सरकार ने दवारका में मरीन पुलिस एकेडमी की भी स्थापना की है।

भाइयो और बहनों, हम देश को 21वीं सदी में नई ऊंचाई पर ले जाने के साथ-साथ अपनी पुरानी विरासत को संजोने का भी काम कर रहे हैं। गांधीजी के नमक सत्याग्रह को समर्पित दांडी स्मारक का अभी कुछ हफ्ते पहले ही लोकार्पण करने का मुझे सौभाग्य मिला था और आज, आज एक ऐसी चीज का शिलान्यास हो रहा है, जिसकी पूरी दुनिया में गूंज होने वाली है। ये छोटी बात नहीं बता रहा हूं मैं। पूरे विश्व में सबसे पहला, हजारों साल पुराना सबसे पहला बंदर ये गुजरात के लोथल का बंदर। पांच हजार साल पुराना बंदर, अगर दुनिया के किसी के पास ऐसी कोई जगह होती तो पूरी दुनिया को पागल करके छोड़ देता दोस्त।

लेकिन अब, जब मुझे भारत सरकार में बैठ करके सेवा करने का मौका मिला है तो आज लोथल में National maritime heritage complex का शिलान्यास भी किया गया है। हिन्दुस्तान की सामुद्रिक शक्ति, दुनिया के संदर्भ में सामुद्रिक शक्ति, पांच हजार साल का हमारा सामुद्रिक जीवन को लेकर ये ऐतिहासिक म्यूजियम बनने वाला है। आप कल्पना कर सकते हैं- पूरे विश्व का कितना बड़ा टूरिज्म हमारे लोथल में आने को मजबूर हो जाएगा। गुजरात को रोजी-रोटी के लिए कितनी बड़ी सुविधाएं हो जाएंगी।



साथियो, लोथल हमारी सामुद्रिक ताकत का प्रतीक रहा है। दुनिया के अनेक देशों के लोग वहां नजदीक में वल्लभी यूनिवर्सिटी से वहां लोग आया करते थे, अध्ययन करने के लिए पहुंचते थे कि कैसे ये पोर्ट काम कर रहा है और इस क्षेत्र के व्यापार को बढ़ाने में मदद कर रहा है। कहते हैं एक समय था जब सैंकड़ों की तादाद में वहां झंडे फहरते थे और दुनिया के कई देश के झंडे वहां फहराया करते थे। National maritime heritage complex हमें उसी गौरव का एहसास कराएगा। और ये भी मैं बता दूं आज मैंने इसका शिलान्यास किया है, उद्घाटन कौन करेगा? कौन करेगा? मुझे विश्वास है देश का आशीर्वाद मेरे साथ है, उसका उद्घाटन भी हमीं करेंगे।

इस कॉम्पलेक्स में म्यूजियम भी होंगे, theme park भी होंगे, रिसर्च सेंटर भी होगा, होटल और रिसोर्ट भी होंगे, यानी ये भारत के समृद्ध सामुद्रिक विरासत से दुनिया को परिचित कराने का माध्यम तो बनेगा ही साथ ही टूरिज्म को बढ़ावा देने का भी जरिया बनेगा। इस कॉम्पलेक्स के तौर पर भारत को ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया को एक नई विरासत मिलने जा रही है।

साथियो, हमारी सरकार द्वारा जो मैं मध्य गुजरात कहता था, एक पूर्वी पट्टी, एक पश्चिमी पट्टी और एक पूरा राजस्थान और महाराष्ट्र को जोड़ने वाला हमारा बीच का इलाका जिसको हम सेंट्रलविस्टा कह सकते हैं। इस मध्य भाग के विकास की आवश्यकताओं को देखते हुए विकास की अनेक परियोजनाओं पर काम किया जा रहा है। अहमदाबाद-मुम्बई बुलेट ट्रेन का काम तेजी से जारी है। ये ट्रेन गुजरात को एक नई पहचान देगी और हिन्दुस्तान का गौरव बढ़ाएगी। यहां के उद्यमियों की मुम्बई से connectivity और आसान करेगी।

आज अहमदाबाद को मेट्रो का उपहार तो मिल ही चुका है, इसके अलावा बड़ोदरा-मुम्बई एक्सप्रेस वे भी सेंटर गुजरात के लोगों और यहां के उद्योगों को बहुत फायदा होगा, साथ ही सरकार साणंद को ऑटोमोबाइल हब की तरह विकसित करने पर काम कर रही है, वहीं धोलेरा को world class commercial hub की तरह विकसित किया जा रहा है। इसमें धोलेरा एयरपोर्ट भी शामिल है। राजकोट में ग्रीन फील्ड एयरपोर्ट के लिए काम किया जा रहा है।

भाइयो और बहनों, सेंट्रल गुजरात की पानी की दिक्कत को दूर करने के लिए सरकार ने तमाम प्रयास करके नर्मदा बांध का काम पूरा कराया और उससे जुड़ी सिंचाई परियोजनाओं पर जोर दिया है। सुजलाम-सुफलाम स्कीम के तहत भी अनेक योजनाएं शुरू की जा रही हैं। इसकी वजह से उत्तर और सेंट्रल गुजरात को नर्मदा के पानी का फायदा मिल रहा है।

साथियो, आज का दिन मेरे लिए एक और वजह से खास है। आज medi-city के विस्तार का सपना, अहमदाबाद के लोगों को सारी स्वास्थ्य सेवाएं एक ही छत के नीचे देने का सपना भी पूरा हुआ है। एक साथ चार अस्पतालों का यहां लोकार्पण किया गया है। महिलाओं और बच्चों के लिए एक विशेष super specialty अस्पताल, कैंसर अस्पताल, eye hospital और dental hospital एक ही जगह पर आपकी सेवा के लिए, गुजरातवासियों की सेवा के लिए तैयार है।

साथियो, अहमदाबाद के दशकों पुराने civil hospital को medi-city के रूप में विकसित करने के लिए 2008 में काम शुरू किया गया था। मुझे खुशी है कि एक दशक के भीतर देश की सबसे बड़ी health care facility medi-city के रूप में आज यहां बन करके तैयार है। उसका स्केल देखिए, जो लोग ये

टीवी पर सुनते होंगे देश में, उनको भी सुन करके अचरज होगा; ये ऐसा कैम्पस जिसमें लगभग 10 हजार डॉक्टर, मेडिकल स्टूडेंट, पैरामेडिकल स्टॉफ, sport staff मिलकर हर दिन लगभग 10 हजार मरीजों को यहां सेवा देने वाले हैं।

आप कल्पना कर सकते हैं, यानी एक प्रकार से 20 हजार की जनसंख्या वाला ये गांव बन गया है। आज के लोकार्पण के बाद medi-city में बेड की क्षमता बढ़कर 5,500 हो गई है और बात यहां तक ने वाली नहीं है, इसमें और भी विस्तार होने वाला है। मुझे विश्वास है कि जिन बाकी अस्पतालों पर काम चल रहा है, वो भी बहुत जल्द बन करके तैयार होंगे।

साथियों, लोगों का स्वास्थ्य हमेशा से हमारी सरकार की प्राथमिकता रही है। आज सुबह मैं जामनगर में था, वहां पर भी 700 बेड के अस्पताल का उद्घाटन किया है। उत्तर हो, दक्षिण हो, पूर्व हो या पश्चिम; स्वास्थ्य से जुड़े infrastructure और health education के संस्थानों में अभूतपूर्व विकास आज देश अनुभव कर रहा है। आज देशभर में 22 एम्स या तो काम कर रहे हैं या उसका construction का काम चल रहा है।

इनमें से 15 एम्स पर बीते 5 वर्षों में ही काम हुआ है। 22 में से 15 इस 55 महीने में। हमारा प्रयास कि देश के छोटे से छोटे कस्बे तक बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं को ले जाया जाए। इसके लिए wellness centre से लेकर medical college तक एक सिलसिला चलाया जा रहा, एक chain चलाया जा रहा है।

साथियों, एक वो भी समय था जब गरीब और निम्न-मध्य वर्ग को भाग्य के भरोसे छोड़ दिया गया था। न पर्याप्त अस्पताल थे और न ही इलाज में सहयोग देने के लिए कोई अच्छी योजनाएं। इलाज के खर्च की वजह से देश के करोड़ों गरीब अस्पताल ही नहीं जाते थे। देशभर में आयुष्मान भारत PM-JAY, ये PM-JAY योजना, लोग उसको मोदी केयर भी कहते हैं। ऐसे अनेक लाभार्थी, उनसे मैं मिलता रहता हूं। आज भी यहां आने से पहले मैं मिला हूं। आजकल मैं देशभर में जब भी ऐसे लाभार्थियों से मिलता हूं, उनसे बातें करता हूं। आयुष्मान भारत योजना उनके लिए जीवनदान बनकर आई है।

साथियों, इस योजना को पांच महीने से कुछ ही ज्यादा वक्त हुआ है, लेकिन अब तक 14 लाख से अधिक गरीब मरीजों को इलाज मिल चुका है। आज गरीब से गरीब को भी अच्छे इलाज का विश्वास मिला है, तो वो उसके पीछे कैसे संभव हुआ? ये आज गरीब को इतनी सुविधा मिल पाई, इसके पीछे किसकी ताकत है बताइए किसकी वजह से हुआ है? किसकी वजह से हुआ है? किसकी वजह से हुआ है? अरे दोस्तों, ये मोदी की वजह से नहीं हो पा रहा है, ये हो पा रहा है इसलिए कि आपने 2014 में सही निर्णय किया था, सही जगह पर वोट दिया था। 2014 में आपने सही नीयत वाली एक मजबूत सरकार के पक्ष में मत दिया था, उसी का परिणाम- आज देश का हमारा गरीब और मध्यम वर्ग का परिवार उसका फायदा उठा रहा है, उसको जिंदगी में नई आशा पैदा हुई है।

भाइयो और बहनों, हमारी सरकार ने एक बुनियादी बदलाव देश की राजनीति में करने का प्रयास किया है। जो भी करना है, साफ-सुथरा और डंके की चोट पर करना है। राष्ट्रहित में, जनहित में बड़े से बड़ा फैसला लेना हो और कड़े से कड़ा फैसला लेना हो, हम पीछे नहीं रहते। आप देख रहे हैं बात चाहे भ्रष्टाचार से लड़ने की हो या फिर आतंकवाद से, हमारी नीति और नीयत, दोनों मेरे देशवासियों आपके सामने हैं।



याद करिए दोस्तो, इस सिविल अस्पताल में क्या हुआ था। ये अस्पताल इंसान को जिंदगी देता है और राक्षसों ने.. मैं जब यहां मुख्यमंत्री था, इसी सिविल अस्पताल में बम धमाके किए थे और निर्दोष लोगों को मौत के घाट उतार दिया था। याद है कि नहीं है? सीमा के उस पार से आतंक होता था। क्या उस समय दिल्ली में बैठे हुए लोगों का दायित्व नहीं था कि हिसाब चुकता करें?

भाइयो और बहनों, ऐसी-ऐसी चीजें मेरे दिल में पड़ी हुई हैं और मैंने उस दिन भी कहा था, पुलवामा के बाद मैं publically कहा था कि जो आग देशवासियों के दिल में है, वो आग मेरे दिल में भी है। अगर उस समय सरकार में दम होता तो अहमदाबाद के सिविल अस्पताल में निर्दोषों की जान लेने वालों को वहां जा करके भी हिसाब चुकता कर देते वहीं।

मुम्बई में 26/11 हुआ, निर्दोष लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। और हम, कुछ दिन के बाद- चलो अब ठीक हो गया है, सब लोग काम में लग गए। आप मुझे बताइए दोस्तो- आतंकवाद के खिलाफ लड़ना चाहिए कि नहीं लड़ना चाहिए? आतंकवाद को जड़-मूल से उखाड़ना चाहिए कि नहीं उखाड़ना चाहिए? आप मुझे बताइए, कौन पार्टी है जो ये काम कर सकती है? ईमानदारी से बताइए, कौन कर सकता है? हम एक तरफ गलत करने वालों को सजा दे रहे हैं तो वहीं ईमानदारी से काम करने वालों का सम्मान भी कर रहे हैं। और भाइयो-बहनों मैं आज अहमदाबाद की धरती पर आया हूं और सिविल अस्पताल में आया हूं; वो दृश्य मैं भूल नहीं सकता हूं। और इसलिए मैं आपको कहना चाहूंगा- सातवें पाताल में होंगे, फिर भी मैं उनको छोड़ने वाला नहीं हूं। और देश का दुर्भाग्य देखिए- कुछ लोगों को तो पता नहीं क्या हो गया है। आज पाकिस्तान के अखबार की हेडलाइन देख लीजिए- भारत के नेता जो भी बयानबाजी करते हैं वो पाकिस्तान के न्यूज की पेपर की हेडलाइन बन जाती है। ऐसे नेता, ऐसी बातें करते हैं जो पाकिस्तान के टीवी पर दिखा रहा है, पाकिस्तान की पार्लियामेंट में चर्चा हो रही है।

क्या ये देश हित का काम है क्या? आप ऐसी बात बोलोगे, जिसमें पाकिस्तान तालियां बजाए? अरे देश की सेना ने पराक्रम किया है, देश की सेना ने हिम्मत दिखाई है और मैं दोस्ता इंतजार लम्बा नहीं कर सकता हूं। चुन-चुन करके हिसाब लेना, ये मेरी फितरत है। कब तक निर्दोष लोगों को मारने देंगे? आप दोस्तो बताइए मुझे, आपको हमारे देश की सेना पर भरोसा है? उनकी बातों पर भरोसा है? वो जो कहते हैं, उस पर आप विश्वास करते हैं? सेना जो कहे, उस पर मुझे विश्वास करना चाहिए? सेना जो कहे, उसको मुझे मानना चाहिए? लेकिन कुछ लोग हैं जिनको सेना की बात भी पसंद नहीं थी।

अरे मोदी की बात मत मानो भाई, मैं नहीं कहता हूं मेरी बात मानो; कम से कम सेना पर तो अविश्वास मत करो। उनके पराक्रम पर तो दाग मत लगाओ। वो जान की बाजी लगा करके खेलता है, वो देश के लिए मर-मिटने के लिए निकलता है और सफल हो करके आता है तो आपकी नींद हराम हो जा रही है। और मान लीजिए, ये हमारे सेना के लोग गए थे, और मान लीजिए वहां कुछ हमारी योजना के हिसाब से न हुआ होता और कुछ उलटा हो गया होता, तो ये लोग क्या करते? क्या करते, मुझे बताइए। किसका इस्तीफा मांगते? किसका इस्तीफा मांगते? क्यों भई? मतलब राजनीति आप कर रहे हो, अब सफल हो रहे हैं तो चिल्ला रहे हैं कि मोदी ने तो आर्मी का नाम ही नहीं देना चाहिए, जय जवान-जय किसान भी नहीं बोलना चाहिए। क्या देश के सेना के जवानों का गौरव करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए? उनका सम्मान करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए?, लेकिन इनके पेट में दर्द हो रहा है।

अब ये कहते हैं ये तो चुनाव वाला खेल है। जब सर्जिकल स्ट्राइक हमने पहली बार की, तब कहां चुनाव था भाई? ये हमारा सिद्धान्त है, हम घर में घुसकर मारेंगे। कोई देश ऐसी असहाय अवस्था में नहीं रह सकता है। 40 साल से आतंकवाद हिन्दुस्तान के सीने में गोलियां दाग रहा है जी। भारत मां के सीने में गोलियां दागी जा रही हैं, बम धमाके किए जा रहे हैं, निर्दोषों को मारा जा रहा है, लेकिन वोट बैंक की राजनीति में डूबे हुए लोग कदम उठाने से डरते हैं। मुझे सत्ता की, कुर्सी की परवाह नहीं है, मुझे चिंता मेरे देश की है। मुझे चिंता मेरे देश की है, मेरे देश के लोगों की सुरक्षा की है। और इसलिए मेहरबानी करके इन सब मसलों पर राजनीति मत करो। अरे मोदी कहता है कि मैंने इतने घर बनाए, उस पर विवाद करो ना- मोदी सच बोल रहा है, झूठ बोल रहा है, सही कह रहा है, नहीं कह रहा है; करो ना विवाद। नहीं कर रहे हैं, सेना को ले करके करते हैं विवाद।

मैं कहता हूं मेट्रो रेल लाया, आपको कहना होगा भाई, चलो नहीं लाया, मोदी झूठ बोल रहा है। करो विवाद कौन मना करता है भाई। मैं कहता हूं medi-city बनाया, आप बोलो- मोदी झूठ बोलता है, medi-city नहीं बनाया। बोलो ना, कौन मना करता है तुम्हें। मोदी को गाली देने के लिए कोई कम जगह है क्या, पूरा मैदान खाली पड़ा है। और मोदी को कोई एतराज नहीं है। सेना को क्यों गाली देते हो? देश के वीर जवानों को क्यों बदनाम करते हो? उनका मनोबल क्यों तोड़ते हो? और इसलिए भाइयो-बहनों, मैंने पहले भी कहा था मैं ऐसी धरती पर आया हूं जहां हमने उस दिन लोगों की लाशें देखी हैं जी। घायल हुए डॉक्टरों को देखा है, खून से लथपथ नर्सों को देखा है। इसलिए मैंने कहा था, मैं यहां आया हूं खुल करके बोलूंगा।

दोस्तो, जिस प्रकार से हम देश की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं और ये लड़ाई हमने छेड़ी है जी। ये आप मानकर चलिए हम देश हित में जो भी आवश्यक होगा, उसको करनी हमारी प्राथमिकता रहेगी, मैं देश को विश्वास दिलाना चाहता हूं। आपने देखा होगा, इस बार हमारा बजट- अंतरिम बजट है, अभी पूरा बजट तो, जब दोबारा आप मुझे प्रधानमंत्री बनाओगे, फिर से आने वाला है। लेकिन इस अंतरिम बजट में भी हमने मिडिल क्लास के लिए अनेक महत्वपूर्ण निर्णय हमने किए हैं। पांच लाख रुपये तक का taxable income को टैक्स के दायरे से बाहर कर दिया है। तीन करोड़ से अधिक लोगों को सीधा राहत देने वाला काम किया है।

साथियो, बीते पांच वर्षों में हमने नए भारत की नींव रखी है, नए भारत के नए संस्कारों को गढ़ने का प्रयास किया है। राष्ट्रहित में ईमानदारी और निष्ठा के साथ हर व्यक्ति काम पाए, कामकाज का ऐसा कल्चर विकसित करने का प्रयास किया है। आने वाले पांच वर्ष अब नए भारत की इस नींव पर वैभवशाली भारत बनाने का, एक मजबूत इमारत बनाने का, मजबूत इरादा कर-करके हम आगे बढ़ रहे हैं। हम सभी इसी दिशा में मिल करके आगे बढ़ेंगे। इस विश्वास के साथ आप सभी को आज जितनी-जितनी सुविधाएं-योजनाएं मिली हैं, उसके लिए मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूं और आप लोगों ने जो प्यार दिखाया है, उस प्यार को मेरे सिर-आंखों पर लेते हुए मेरे साथ बोलिए-

भारत माता की – जय

भारत माता की – जय

भारत माता की – जय

वंदे – मातरम

वंदे – मातरम

वंदे – मातरम

धन्यवाद।

\*\*\*\*\*

**अतुल तिवारी/शाहबाज़ हसीबी/बाल्मीकि महतो/निर्मल शर्मा**

(रिलीज़ आईडी: 1567549) आगंतुक पटल : 777

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Assamese , English

प्रधानमंत्री कार्यालय

# फिट इंडिया मूवमेंट के शुभारंभ पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 29 AUG 2019 4:59PM by PIB Delhi

मंत्रिपरिषद के मेरे सहयोगी श्रीमान नरेंद्र सिंह जी तोमर, डॉक्टर हर्षवर्धन जी, रमेश पोखरियाल निशंक जी और इस पूरे अभियान का जो नेतृत्व संभाल रहे हैं, श्रीमान किरन रिजिजू जी, यहां उपस्थित सभी वरिष्ठ महानुभाव, खेल जगत के सारे सितारे और मेरे प्यारे विद्यार्थी भाइयो और बहनो,

कुछ लोगों को लगता होगा कि हम तो स्कूल जाते नहीं हैं, कॉलेज जाते नहीं हैं, लेकिन मोदी जी ने सिर्फ विद्यार्थियों को क्यों कहा। आप लोग यहां आए हैं, उम्र कोई भी हो, लेकिन मुझे विश्वास है आपके भीतर का विद्यार्थी जिंदा है।

आप सभी को National Sports Day की अनेक-अनेक शुभकामनाएं। आज के ही दिन हमें मेजर ध्यानचंद के रूप में एक महान sports person मिले थे। अपनी fitness, stamina और hockey stick से दुनिया को उन्होंने मंत्रमुग्ध कर दिया था। ऐसे मेजर ध्यानचंद जी को मैं आज आदरपूर्वक नमन करता हूं।

आज के दिन Fit India Movement, ऐसा initiative launch करने के लिए एक Healthy India की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम और इस concept से movement के लिए, मैं खेल मंत्रालय को, युवा विभाग को बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

यहां जो आज प्रस्तुति हुई, इस प्रस्तुति में हर पल fitness का कोई न कोई मैसेज था। परम्पराओं का स्मरण कराते हुए सहज रूप से हम अपने-आपको फिट कैसे रख सकते हैं, बहुत उत्तम तरीके से इन चीजों को प्रस्तुत किया। और ये चीजें इतने बढ़िया ढंग से प्रस्तुत हुई हैं कि मुझे मेरे भाषण की कोई जरूरत नहीं लगती है। यहां प्रस्तुति में जितनी बातें बताई गई हैं, उसी को अगर हम गांठ बांध लें और एकाध-दो, एकाध-दो को जिंदगी का हिस्सा बना लें; मैं नहीं मानता हूं कि फिटनेस के लिए मुझे कोई उपदेश देने की आवश्यकता पड़ेगी।

इस उत्तम कार्य रचना के लिए, इस उत्तम प्रकार की प्रस्तुति के लिए, जिन्होंने इसको conceptualize किया होगा, जिन्होंने इसमें नए-नए रंग-रूप भरे होंगे, और जिन्होंने परिश्रम करके इसको प्रस्तुत किया है; आप सभी बहुत-बहुत अभिनंदन के अधिकारी हैं। मैं भविष्य में चाहूंगा कि इसी में से एक अच्छा professional video बना करके सभी school, colleges में दिखाया जाए ताकि सहज रूप से, क्योंकि एक जनआंदोलन बनना चाहिए।

साथियो,

आज का ये दिन हमारे उन युवा खिलाड़ियों को बधाई देने का भी है, जो निरंतर दुनिया के मंच पर तिरंगे की शान को नई बुलंदी दे रहे हैं। बेडमिंटन हो, टेनिस हो, एथलेटिक्स हो, बॉक्सिंग हो, कुश्ती हो या फिर दूसरे खेल, हमारे खिलाड़ी हमारी उम्मीदों और आकांक्षाओं को नए पंख लगा रहे हैं। उनका जीता हुआ मेडल, उनके तप और तपस्या का परिणाम तो है ही, ये नए भारत के नए जोश और नए आत्मविश्वास का भी पैमाना है। मुझे खुशी है कि बीते पांच वर्षों में भारत के sports के लिए बेहतर माहौल बनाने के जो प्रयास हुए हैं, उसका लाभ आज हमें दिखाई दे रहा है।

साथियो, Sports का सीधा नाता है Fitness से। लेकिन आज जिस Fit India Movement की शुरुआत हुई है, उसका विस्तार Sports से भी बढ़ करके आगे जाने का है। Fitness एक शब्द नहीं है बल्कि स्वस्थ और समृद्ध जीवन की एक जरूरी शर्त है। हमारी संस्कृति में तो हमेशा से ही Fitness पर बहुत ज्यादा जोर दिया गया है। किसी बीमारी के बाद परहेज से हमने ज्यादा बेहतर स्वास्थ्य के लिए किए जाने वाले उपायों को प्राथमिकता दी है, उनको श्रेष्ठ माना है। Fitness हमारे जीवन का सहज हिस्सा रही है। और हमारे यहां तो हमारे पूर्वजों ने, हमारे साथियों ने बार-बार कहा है -

व्यायामात् लभते स्वास्थ्यं दीर्घायुष्यं बलं सुखं।

आरोग्यं परमं भाग्यं स्वास्थ्यं सर्वार्थसाधनम्॥

यानी व्यायाम से ही स्वास्थ्य, लम्बी आयु, शक्ति और सुख की प्राप्ति होती है। निरोगी होना परम भाग्य है, और स्वास्थ्य से अन्य सभी कार्य सिद्ध होते हैं। लेकिन समय रहते-रहते परिभाषाएं बदल गईं- पहले हमें सिखाया जाता था, हमें सुनने को मिलता था कि स्वास्थ्य से ही सभी कार्य सिद्ध होते हैं, अब सुनने को मिलता है स्वार्थ से ही सभी कार्य सिद्ध होते हैं। और इसलिए ये स्वार्थ भाव को स्वास्थ्य भाव तक फिर से वापिस ले जाने का एक सामूहिक प्रयास आवश्यक हो गया है।

साथियो,

मैं जानता हूं कि कुछ लोग ये सोच रहे होंगे Fitness जरूरी है ये तो हमें भी पता है, फिर अचानक इस तरह की movement की जरूरत क्या है? साथियो, जरूरत है और आज शायद बहुत ज्यादा जरूरत है।

Fitness हमारे जीवन के तौर-तरीकों, हमारे रहन-सहन का अभिन्न अंग रहा है, लेकिन ये भी सच है कि समय के साथ Fitness को लेकर हमारे समाज-जीवन में, हमारी सोसायटी में एक उदासीनता आ गई है।

समय कैसे बदला है, उसका एक उदाहरण मैं आपको देता हूं। कुछ दशक पहले तक एक सामान्य व्यक्ति एक दिन में 8-10 किलोमीटर पैदल चल लेता था, कुछ एकाध घंटे भर साइकिल चला लेता था, कभी बस पकड़ने के लिए भागता था। यानी जीवन में शारीरिक गतिविधि सहज हुआ करती थी। फिर धीरे-धीरे टेक्नोलॉजी बदली, आधुनिक साधन आए और व्यक्ति का पैदल चलना कम हो गया।

Physical activity कम हो गई। और अब स्थिति क्या है? टेक्नोलॉजी ने हमारी ये हालत कर दी है कि हम चलते कम हैं और वही टेक्नोलॉजी हमें गिन-गिन के बताती है कि आज आप इतने steps चले, अभी 5 हजार steps नहीं हुए, 2 हजार steps नहीं हुए, और हम मोबाइल फोन देखते रहते हैं। यहां मौजूद आप में से कितने लोग 5 हजार, 10 हजार steps वाला काम करते हैं? कई लोग होंगे जिन्होंने इस प्रकार की watch पहनी होगी या मोबाइल फोन पर एप डालकर रखी होगी। मोबाइल पर चैक करते रहते हैं कि आज कितने steps हुए।

साथियो,

आप में से बहुत से लोग सजग हैं, सतर्क हैं, लेकिन देश में बहुत बड़ी संख्या ऐसे लोगों की भी है जो अपनी daily life में इतना मशगूल हैं कि अपनी Fitness पर ध्यान ही नहीं दे पाते। इनमें से कुछ लोग तो और भी विशेष हैं। और आपने देखा होगा कुछ चीजें फैशन स्टेटमेंट हो जाती हैं। और इसलिए Fitness की जरा बात करना दोस्तों में- भोजन की टेबल पर बैठे हैं, भरपूर खा रहे हैं, आवश्यकता से डबल खा चुके हैं और बड़े आराम से डाइटिंग की चर्चा करते हैं। महीने में कम से कम दस दिन आपको अनुभव होता होगा कि आप डाइटिंग टेबल पर बैठे हैं, भरपूर खा रहे हैं और बड़े मजे से डाइटिंग पर बढ़िया-बढ़िया उपदेश दे रहे हैं। यानी ये लोग जोश में आकर बातें भी करते हैं और इससे जुड़े गैजेट खरीदते रहते हैं और उनको ध्यान में रहता है ऐसे कोई नया गैजेट होगा, शायद मेरा Fitness ठीक हो जाएगा। और आपने देखा होगा, घर में तो बहुत बड़ा जिम होगा, Fitness के

लिए सब कुछ होगा, लेकिन उसकी सफाई के लिए भी नौकर रखना पड़ता है क्योंकि कभी जाते नहीं हैं और कुछ दिन बाद वो सामान घर के सबसे किनारे वाले कमरे में रख दिया जाता है। लोग मोबाइल पर Fitness वाले एप भी डाउनलोड करने में सबसे आगे होते हैं, लेकिन कुछ दिन बाद उस एप को कभी देखते भी नहीं हैं, यानी ढाक के तीन पात।

मेरा जन्म गुजरात में हुआ। हमारे यहां गुजरात में एक ज्योतीन्द्र भाई दवे करके बहुत ही उत्तम प्रकार के हास्य लेखक थे। व्यंग्य लिखते थे और बड़ा interesting लिखते थे। और ज्यादातर वो अपने खुद पर व्यंग्य करते थे। अच्छा, उनके शरीर का वो वर्णन करते - वो कहते थे मैं कहीं खड़ा रहता हूं, दीवार के पास खड़ा हूं तो लोगों को लगता था कि हैंगर पर कुछ कपड़े टंगे हुए हैं, यानी वो इतने दुबले थे कि ऐसा लगता था कि जैसे हैंगर पर कपड़े टंगे हैं, तो कोई मानने को तैयार नहीं होता था कि मैं कोई इंसान वहां खड़ा हूं। फिर वो लिखते थे कि मैं घर से निकलता हूं तो मेरी जेब में पत्थर भर के चलता हूं। वो कोट पहनते थे, सभी जेब के अंदर पत्थर भरते थे। तो लोग मुझे मानते थे शायद मैं हिंसा कर बैठूंगा, मार दूंगा। तो लोग मुझे पूछते थे- इतने सारे पत्थर लेकर क्यों चलते हो? तो उन्होंने कहा कि मुझे डर लगता है कहीं हवा आए उड़ न जाऊं। ऐसी बड़ी मजेदार चीजें लिखते थे वो। एक बार किसी ने उनको कहा कि पत्थर-वत्थर ले करके घूमने के बजाय आप थोड़ा जरा व्यायाम करते रहिए, व्यायामशाला में जाइए। तो उन्होंने उस सज्जन को पूछा कि कितना व्यायाम करना चाहिए, बोले बस पसीना हो जाए इतना तो शुरू करो पहले। व्यायामशाला में जाओ और पसीना हो जाए, उतना करिए। तो बोले- ठीक है, कल से जाऊंगा। तो दूसरे दिन बोले- मैं व्यायामशाला पहुंच गया और ये हमारे जो कुश्तीबाज होते हैं, वो लोग अखाड़े में अपनी कुश्ती कर रहे थे। बोले- जा करके मैं देखने लगा और देखते ही मेरा पसीना छूट गया, तो मुझे लगा कि मेरी exercise को गई। यानी ये बात हंसी की जरूर है, मजाक अपनी जगह है, लेकिन स्वास्थ्य के लिए अच्छा भी है, लेकिन कुछ चिंताएं इससे भी बड़ी हैं।

आज भारत में diabetes, hypertension जैसी अनेक lifestyle diseases बढ़ती जा रही हैं। कभी-कभी तो सुनते हैं परिवार में 12-15 साल का बच्चा diabetic patient हो गया है। अपने आसपास देखिए, तो आपको अनेक लोग इनसे पीड़ित मिल जाएंगे। पहले हम सुनते थे कि 50-60 की उम्र के बाद हार्ट अटैक का खतरा बढ़ जाता है, लेकिन आज कभी-कभी खबर आती है 30 साल, 35 साल, 40 साल का नौजवान बेटा-बेटी चले गए, हार्ट अटैक आ रहा है। ये स्थिति वाकई बहुत चिंताजनक है, लेकिन इन सारी स्थितियों में भी उम्मीद की एक किरण भी है। अब आप सोचेंगे कि इन बीमारियों के बीच भी उम्मीद की किरण की बात कैसे कह रहा हूं। मैं स्वभाव से बहुत ही positive thinking करने वाला इंसान हूं। इसलिए मैं उसमें से भी कुछ अच्छी चीजें ढूँढ़कर निकालता हूं।

साथियो,

Lifestyle disease हो रही है lifestyle disorder की वजह से। अब Lifestyle disorder को हम lifestyle बदल के, उसमें बदलाव करके, उसको ठीक भी कर सकते हैं। तमाम ऐसी बीमारियां हैं जिन्हें हम अपने daily routine में छोटे-छोटे बदलाव करके, अपनी lifestyle में बदलाव करके उससे हम बच सकते हैं, उसको दूर रख सकते हैं। इन बदलावों के लिए देश को प्रेरित करने का नाम ही Fit India Movement है। और ये कोई सरकारी Movement नहीं है। सरकार तो एक catalytic agent के रूप में इस विषय को आगे बढ़ाएगी, लेकिन एक प्रकार से हर परिवार का एजेंडा बनना चाहिए, ये हर परिवार की चर्चा का विषय बनना चाहिए। अगर व्यापारी हर महीने हिसाब लगता है कितनी कमाई की, शिक्षा में रुचि रखने वाले परिवार में चर्चा करते हैं बेटों को कितने marks आया; उसी प्रकार से परिवार के अंदर सहज रूप से शारीरिक श्रम, शारीरिक व्यायाम, physical fitness, ये रोजमर्रा की जिंदगी की चर्चा के विषय बनने चाहिए।



और साथियो, भारत में ही अचानक इस तरह की जरूरत महसूस हुई हो, ऐसा नहीं है। समय के साथ ये बदलाव सिर्फ भारत में ही आ रहा है, ऐसा भी नहीं है। पूरे विश्व में आज इस तरह के अभियानों की जरूरत महसूस की जा रही है। अनेक देश अपने यहां fitness के प्रति awareness बढ़ाने के लिए बड़े-बड़े अभियान चला रहे हैं। हमारे पड़ोस में चीन- Healthy China 2030, इसको mission mode में काम कर रहा है। यानी 2030 तक China का हर नागरिक तंदुरुस्त हो, इसके लिए उन्होंने पूरा टाइम टेबल बनाया है। इसी तरह ऑस्ट्रेलिया अपने नागरिकों की physical activity बढ़ाने और inactive यानी आलसीपन जो है, कुछ करना-धरना नहीं, उस स्वभाव को बदलने के लिए उन्होंने लक्ष्य तय किया है कि 2030 तक देश के 15 प्रतिशत नागरिकों को आलस से बाहर निकाल करके fitness के लिए, activeness के लिए हम काम करेंगे। ब्रिटेन में जोर-शोर से अभियान चल रहा है कि 2020 तक पांच लाख नए लोग daily exercise के routine से जुड़ें, ये उन्होंने target तय किया है। अमेरिका 2021 तक अपने एक हजार शहरों को free fitness अभियान से जोड़ने का काम कर रहा है। जर्मनी में भी fit instead of fat, इसका बड़ा अभियान चल रहा है।

साथियो, मैंने आपको कुछ ही देशों के नाम गिनाए हैं। अनेक देश बहुत पहले से इस पर काम शुरू कर चुके हैं। इन सारे देशों में लोग fitness की जरूरत को समझते हैं, लेकिन फिर भी उन्होंने अपने यहां विशेष अभियान शुरू किए हैं। सोचिए- आखिर क्यों? क्योंकि सिर्फ कुछ लोगों को फिट रहने से नहीं, बल्कि पूरे देश के फिट रहने से ही देश का फायदा होगा। नए भारत का हर नागरिक फिट रहे, अपनी ऊर्जा बीमारियों के इलाज में नहीं बल्कि खुद को आगे बढ़ाने में, अपने परिवार, अपने देश को आगे बढ़ाने में लगाए, इस दिशा में हमें आगे बढ़ना होगा।

साथियो,

जीवन में जब आप एक लक्ष्य तय कर लेते हैं तो उस लक्ष्य के अनुसार ही हमारा जीवन ढलना शुरू हो जाता है। जीवन ढल जाता है, हमारी आदतें वैसी बन जाती हैं, हमारी दिनचर्या वैसी बन जाती है। हमको सुबह आठ बजे उठने की आदत हो, लेकिन कभी सुबह 6 बजे अगर जहाज पकड़ना है, 6 बजे ट्रेन पकड़नी है, तो हम उठते ही हैं, तैयार होकर चलते ही हैं। किसी student ने अगर ये तय किया कि मुझे 10वीं या 12वीं के बोर्ड में कम से कम इतने पर्सेंट लाने ही हैं, तो आपने देखा होगा कि वो अपने-आप, अपने में एक बहुत बड़ा बदलाव लाना शुरू कर देता है। अपने लक्ष्य को हासिल करने की धुन में उसका आलस खत्म हो जाता है, उसकी sitting capacity बढ़ जाती है, उसकी concentration capacity बढ़ जाती है, वो दोस्तों से समय धीरे-धीरे कम करता जाता है, थोड़ा खाने की आदत कम करता जाता है, टीवी देखना बंद कर देता है, यानी जीवन को ढालने लग जाता है क्योंकि मन में लक्ष्य हो गया कि मुझे ये करना है।

इसी तरह कोई अगर अपने जीवन का लक्ष्य wealth creation बनाता है तो उसका जीवन भी बदल जाता है। वो चौबीसो घंटे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में जुटा रहता है। ऐसा ही जब जीवन में fitness के प्रति awareness आती है, health consciousness आती है, मन एक बार तय करे कि भाई मैं बिल्कुल ही कभी थकूंगा नहीं, कभी सांस फूलेगी नहीं, चलना पड़ेगा तो चलूंगा, दौड़ना पड़ेगा तो दौड़ूंगा, चढ़ना पड़े तो चढ़ूंगा, रुकूंगा नहीं। आप देखिए, धीरे-धीरे-धीरे आपकी जीवन दिनचर्या भी वैसी बनना शुरू हो जाती है। और फिर ऐसी चीजें जो शरीर को नुकसान करती हैं, उससे वो व्यक्ति दूर रहता है क्योंकि उसके अंदर एक consciousness आ जाती है, जागरूक हो जाता है। जैसे वो drugs की गिरफ्त में कभी नहीं आएगा, उसके लिए कभी drugs cool नहीं होगी, style statement नहीं बनेगी।

साथियो,

स्वामी विवेकानंद जी भी कहते थे कि अगर जीवन में purpose हो, पूरे passion के साथ उसके लिए काम किया जाए तो अच्छा स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि उसके by-product के रूप में आपके जीवन में आ जाते हैं। अपने जीवन के उद्देश्य को हासिल करने के लिए हमारे भीतर एक जुनून, एक इच्छाशक्ति, एक लगन का होना भी उतना ही जरूरी है। जब एक purpose के साथ, passion के साथ हम काम करते हैं, आगे बढ़ते हैं तो सफलता हमारे कदम चूमने के लिए तैयार हो जाती है। और सफलता पर आपने वो कहावत भी सुनी होगी- There is no elevator to success, you have to take the stairs. यानी इस कहावत में भी आपको सीढ़ी के कदम चढ़ने के लिए ही कहा गया है।

Step तो आप तभी चढ़ पाएंगे जब फिट होंगे, वरना लिफ्ट बंद हो गई तो सोचेंगे यार आज नहीं जाएंगे, कौन चौथी मंजिल पर जाएगा।

भाइयो और बहनो,

सफलता और फिटनेस का रिश्ता भी एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। आज आप कोई भी क्षेत्र लीजिए, अपने icons को देखिए, उनकी success stories को देखिए, चाहे वो Sports में हों, फिल्मों में हों, बिजनेस में हों, इनमें से अधिकतर फिट हैं। ये सिर्फ संयोग मात्र नहीं है। अगर आप उनकी lifestyle के बारे में पढ़ेंगे तो पाएंगे कि एक चीज, ऐसे हर व्यक्ति में Common है। सफल लोगों का Common character है - Fitness पर उनका फोकस, Fitness पर उनका भरोसा। आपने बहुत से डॉक्टरों को भी देखा होगा, बहुत popular होते हैं और दिन में 10-10, 12-12 घंटे अनेक patients के ऑपरेशन करते हैं। बहुत से उद्यमी सुबह एक मीटिंग एक शहर में करते हैं, दूसरी मीटिंग दूसरे शहर में करते हैं, उनके चेहरे पर शिकन तक नहीं आती। उतनी ही alertness के साथ काम करते हैं। आप किसी भी प्रोफेशन में हों, आपको अपने प्रोफेशन में efficiency लानी है तो मेंटल और फिजिकल फिटनेस बहुत जरूरी है। चाहे Boardroom हो या फिर Bollywood, जो फिट है वो आसमान छूता है। Body fit है तो Mind hit है।

साथियो,

जब फिटनेस की तरफ हम ध्यान देते हैं, हम फिटनेस पर ध्यान देते हुए अपने आपको फिट करने की कोशिश करते हैं, तो इससे हमें अपनी बॉडी को भी समझने का मौका मिलता है। ये हैरानी की बात है, लेकिन हम अपने शरीर के बारे में, अपनी ताकत, अपनी कमजोरियों के बारे में बहुत ही कम जानते हैं। इसलिए जब हम Fitness की अपनी यात्रा पर निकलते हैं तो अपनी बॉडी को बेहतर ढंग से समझना शुरू करते हैं। और मैंने ऐसे कई लोगों को देखा है जिन्होंने ऐसे ही अपनी Body की शक्ति को जाना है, पहचाना है। इससे उनका आत्मविश्वास भी बढ़ा है, जिससे एक बेहतर व्यक्तित्व के निर्माण में उन्हें मदद मिली है।

साथियो,

Fit India अभियान भले ही सरकार ने शुरू किया है, लेकिन इसका नेतृत्व आप सभी को ही करना है। देश की जनता ही इस campaign को आगे बढ़ाएगी और सफलता की बुलंदी पर पहुंचाएगी। मैं अपने निजी अनुभव से कह सकता हूं कि इसमें Investment Zero है, लेकिन Return असीमित हैं।

यहां मंच पर मानव संसाधन विकास मंत्री, ग्रामीण विकास मंत्री भी हैं। मेरा उनको विशेष आग्रह है कि देश के हर गांव में, देश की हर पंचायत में, देश के हर स्कूल में ये अभियान पहुंचना चाहिए। ये अभियान सिर्फ एक मंत्रालय का नहीं है, सिर्फ सरकार का नहीं है, ये सरकार चाहे केंद्र की हो, राज्य की हो, नगर पालिका हो, पंचायत हो, कोई भी दल हो, कोई भी विचारधारा हो, फिटनेस के संबंध में किसी को कोई problem नहीं होना चाहिए। पूरा देश, हर परिवार इस पर बल दें। अभी हमने कार्यक्रम में देखा, हमारे यहां फिटनेस के साथ वीरता का भी माहात्म्य है, लेकिन दुर्भाग्य से सीमित सोच के



कारण, पूर्ण सोच के अभाव के कारण हमने हमारी परम्पराओं से ऐसी गाड़ी derail कर दी है, जैसे कभी हमारे यहां जो 60-70-80 साल के उम्र के लोग होंगे, जब वो स्कूल में पढ़ते तो तब तलवार का 'त' पढ़ाया जाता था। 'त' तलवार का 'त'। बाद में कुछ बुद्धिमान लोगों ने विवाद खड़ा किया, सीमित सोच का परिणाम था कि भाई तलवार बच्चों को पढ़ाने से उसके अंदर हिंसक मनोवृत्ति आती है। तो क्या करें, तो तलवार को निकाल दो, 'त' तरबूज का 'त' पढ़ाओ। यानी हमने किस प्रकार से मनोवैज्ञानिक रूप से भी हमारी महान परम्पराओं से वीरता को भी, शारीरिक सामर्थ्य को भी, फिटनेस को भी बहुत गहरी चोट पहुंचाई है।

और इसलिए मैं चाहूंगा कि हर प्रकार से हम फिटनेस को एक उत्सव के रूप में, जीवन के एक हिस्से के रूप में, परिवार के सफलता के जितने भी मानक हों, उसमें फिटनेस भी एक परिवार की सफलता का मानक होना चाहिए। व्यक्ति के जीवन की सफलताओं में भी फिटनेस उसका एक मानक होना चाहिए। अगर इन भावों को ले करके हम चलते हैं और राज्य सरकारें हो, मैं उनको भी कहूंगा कि Fit India Movement को ज्यादा से ज्यादा विस्तार देने, इसे देश के दूर-दराज वाले क्षेत्रों में पहुंचाने के लिए हर कोई आगे आए। अपने स्कूलों में, अपने कार्यालयों में, अपने राज्य के लोगों में फिटनेस के प्रति जागरूकता बढ़ाकर, उनके लिए आवश्यक संसाधन जुटाकर हमें ज्यादा से ज्यादा लोगों को daily अपना कुछ समय फिटनेस को देने के लिए प्रेरित करना होगा। स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ परिवार और स्वस्थ समाज, यही नए भारत को श्रेष्ठ भारत बनाने का रास्ता है। जैसे आपने स्वच्छ भारत अभियान को अपने जीवन का हिस्सा बनाया है, उसी तरह Fit India Movement को भी अपने जीवन का हिस्सा बनाना है।

आइए, आप आज ये संकल्प लें, ये प्रतिज्ञा लें कि आप खुद भी फिट रहेंगे, अपने परिवार, मित्रों, पड़ोसियों, और जिनको भी आप जानते हैं, उन सभी को फिट रहने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। मैं फिट तो इंडिया फिट।

इसी एक आग्रह के साथ एक बार फिर इस अभियान के लिए देशवासियों को मेरी अनेक-अनेक शुभकामनाएं हैं और समाज के हर तबके में नेतृत्व करने वाले लोगों से मेरा आग्रह है कि आप आगे आइए, इस movement को बल दीजिए, समाज के स्वस्थ होने में आप भी हिस्सेदार बनिएं। इसी एक अपेक्षा के साथ, अनेक-अनेक शुभकामनाओं के साथ आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद।

\*\*\*\*\*

वीआरआरके/केपी/बीएम/एनके

(रिलीज़ आईडी: 1583489) आगंतुक पटल : 648

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Assamese , English , Urdu , Marathi , Bengali , Punjabi

प्रधानमंत्री कार्यालय

# ‘आरोग्य मंथन’ के समापन कार्यक्रम में प्रधानमंत्री का संबोधन

प्रविष्टि तिथि: 01 OCT 2019 8:53PM by PIB Delhi

मंच पर उपस्थित मंत्री परिषद के मेरे साथी डॉक्टर हर्षवर्धन जी, अश्विनीकुमार चौबे जी, अलग-अलग राज्यों से आए, और संस्थानों से आए प्रतिनिधिगण, आयुष्मान भारत के साथ जुड़े सभी साथी, तथा यहाँ पर आए हुए सभी लाभार्थी।

भाइयो और बहनों, आज तीसरा नवरात्र है। आज मां के चन्द्रघंटा स्वरूप की पूजा की जाती है। मान्यता है कि दस भुजाओं वाली देवी चन्द्रघंटा चन्द्रमा की शीतलता और सौम्यता लिए संपूर्ण जगत की पीड़ा का नाश करती है। भारत के 50 करोड़ से अधिक गरीबों की पीड़ा को हरने वाली आयुष्मान भारत योजना के पहले वर्ष पर चर्चा का इससे बेहतर संयोग भला क्या हो सकता है।

साथियो, आयुष्मान भारत का ये पहला वर्ष संकल्प का रहा है, समर्पण का रहा है, सीख का रहा है। ये भारत की संकल्प शक्ति ही है कि दुनिया की सबसे बड़ी Health care scheme हम भारत में सफलता के साथ चला रहे हैं। और इस सफलता के पीछे समर्पण की भावना है, सद्भावना है। ये समर्पण देश के हर राज्य और केन्द्रशासित प्रदेश का है, ये समर्पण देश के हजारों सरकारी और निजी अस्पतालों का है, ये समर्पण हर कर्मचारी, हर medical practitioner, आयुष्मान मित्र, आशा वर्कर सामाजिक संगठनों, जन-प्रतिनिधियों, यानी सबका है।

भाइयो और बहनों, इसी समर्पण के कारण ही आज देश विश्वास से कह रहा है, गर्व से कह रहा है- साल एक-आयुष्मान अनेक।

देशभर के गरीब, 46 लाख गरीब परिवारों को बीमारी की निराशा से स्वस्थ जीवन की आशा जगाना, ये बहुत बड़ी सिद्धि है। इस एक वर्ष में अगर किसी एक व्यक्ति की जमीन, घर, गहने या दूसरा कोई सामान बीमारी के खर्च में बिकने से बचा है, गिरवी रखने से बचा है; तो ये आयुष्मान भारत की बहुत बड़ी सफलता है।

साथियो, थोड़ी देर पहले ऐसे ही कुछ लाभार्थियों से मुझे बात करने का अवसर मिला। बीते एक वर्ष में, यहाँ तक कि चुनाव के दौरान भी मैंने देशभर में ऐसे तमाम साथियों से संवाद करने का लगातार प्रयास किया है। उनसे बातचीत करने पर ये आपको अनुभव होता है कि आयुष्मान भारत ‘PMJAY’ गरीबों के जीवन में क्या परिवर्तन ला रही है। और एक प्रकार से पीएमजय अब गरीबों की जय बन गई है। जब गरीब का बच्चा स्वस्थ होता है, जब घर-घर का एकमात्र कमाने वाला स्वस्थ होकर फिर काम पर निकलता है, तब आयुष्मान होने का अर्थ समझ में आता है। और इसलिए आयुष्मान भारत ‘PMJAY’ की सफलता के लिए समर्पण करने वाले, समर्पित हर व्यक्ति, हर संस्था के साथ देश के करोड़ों गरीबों की अनेक-अनेक शुभकामनाएँ हैं। इस महान कार्य में जुटे हर साथी को मैं बहुत-बहुत साधुवाद देता हूँ, बधाई देता हूँ।

भाइयो और बहनों, संकल्प और समर्पण के साथ-साथ इस पहले वर्ष में हमने अनुभव से बहुत कुछ सीखा है। अभी यहाँ आने से पहले मैंने प्रदर्शनी के माध्यम से एक वर्ष की यात्रा को भी देखा है। कैसे समय के साथ हमने हर चुनौतियों को दूर किया है, तकनीकी रूप से निरंतर विस्तार किया है, हर stake holder से निरंतर संवाद बनाए रखा है, शंकाओं और आशंकाओं को दूर किया है। सीख का, संवाद का, सुधार का ये सिलसिला आगे भी निरंतर चलता रहेगा।

साथियो, इस योजना की reach को, monitoring को कैसे प्रभावी बनाया जाए, लाभार्थियों के लिए कैसे इसको सुगम बनाया जाए, अस्पतालों की दिक्कतों को कैसे दूर किया जाए; इसको लेकर यहां दो दिन के दरम्यान विस्तार से चर्चा हुई है। क्वालिटी से लेकर capacity building तक, यहाँ खुलकर विचार रखे गए हैं। विशेषतौर पर universal health care यानी इस योजना का दायरा हर परिवार पर कैसे लागू हो, इसको लेकर देश के कुछ राज्यों ने जो अपने अनुभव साझा किए हैं, उन पर गंभीरता से विचार होना चाहिए। ये हम सभी का दायित्व है कि हर गरीब के लिए, हर देशवासी के लिए मुश्किल समय में अस्पताल के दरवाजे खुले रहने चाहिए, बेहतर इलाज उपलब्ध होना चाहिए।

भाइयो और बहनों, आयुष्मान भारत New India के क्रांतिकारी कदमों में से एक है। सिर्फ इसलिए नहीं क्योंकि ये देश के सामान्य मानवी के, गरीब के जीवन को बचाने में अहम भूमिका निभा रहा है, बल्कि इसलिए भी क्योंकि ये भारत के रूप में 130 करोड़ लोगों के सामूहिक संकल्पों और सामर्थ्य का भी प्रतीक है। ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूँ कि हमारे देश में गरीब को सस्ती और बेहतर स्वास्थ्य सेवा देने के प्रयास पहले भी हुए हैं। हर राज्य, हर केंद्रशासित प्रदेश ने अपने सीमित स्तर पर हर संभव कोशिश की है। राज्यों की तमाम सद्भावना के बावजूद न तो गरीबों को वो लाभ मिल पा रहा था, और नही medical infrastructure के क्षेत्र में कोई सुधार हो पा रहा था। लेकिन आयुष्मान भारत ने सिद्ध कर दिया कि जब भारत की सामूहिक ताकत अगर कहीं पर भी लग जाती है तो उसका लाभ और शक्ति बहुत व्यापक हो जाती है, विराट हो जाती है। आयुष्मान भारत देश के किसी भी हिस्से के मरीज को देश के किसी भी कोने में लाभ सुनिश्चित करती है और जो पहले असंभव था। यही कारण है कि बीते एक वर्ष में करीब 50 हजार लाभार्थियों ने अपने राज्य के बाहर दूसरे राज्यों में इस योजना का लाभ लिया है, यानी अच्छे अस्पताल में माना।

भाइयो और बहनों, देश का कोई भी व्यक्ति इलाज के लिए अपने घर, अपने जिले, अपने राज्य से दूर नहीं जाना चाहता, ये कदम मजबूरी में ही उठाना पड़ता है। देश के हर नागरिक को घर के पास ही बेहतरीन स्वास्थ्य सुविधाएँ मिलें, इसके लिए हर राज्य प्रयास कर रहे हैं। ये भी सच है कि देश के उन हिस्सों में, जहाँ स्वास्थ्य सुविधाएँ बेहतर हैं, वहाँ दबाव जरा अधिक है, लेकिन ये हर भारतीय का दायित्व है कि देश का कोई नागरिक आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित नहीं रहना चाहिए। आयुष्मान भारत इसी भावना को मजबूत कर रही है।

साथियो, आयुष्मान भारत संपूर्ण भारत के लिए सामूहिक समाधान के साथ-साथ स्वस्थ भारत के समग्र समाधान की भी योजना है। सरकार की उस सोच का विस्तार है जिसके तहत हम भारत की समस्याओं और चुनौतियों से निपटने के लिए टुकड़ों में सोचने की बजाय समग्रता में काम कर रहे हैं। कुछ दिन पहले संयुक्त राष्ट्र में Universal Health Care को लेकर एक कार्यक्रम हुआ था, जिसमें मुझे भारत की बात बताने का अवसर मिला। भारत में Health Care को लेकर जिस प्रकार holistic approach के साथ काम हो रहा है, जिस scale पर काम हो रहा है, और दुनिया के लिए एक अजूबा है, हैरान हैं दुनिया।

भाइयो और बहनों, संयुक्त राष्ट्र में मौजूद दुनियाभर के प्रतिनिधियों को मैंने बताया कि कैसे हम स्वस्थ भारत को चार मजबूत स्तंभों पर खड़ा कर रहे हैं। पहला- Preventive Health Care, दूसरा- Affordable Health Care, तीसरा- सप्लाई साइडका सुधार और चौथा-राष्ट्रीय पोषण अभियान जैसे Mission Mode Interventions का है।

पहले स्तंभ की अगर बात करें तो आज स्वच्छता, योग, आयुष, टीकाकरण और फिटनेस पर बल दिया जा रहा है, ताकि लाइफ लाइन से जुड़ी बीमारियाँ कम से कम हों। इतना ही नहीं, पशुओं के कारण भी फैलने वाली बीमारियाँ मनुष्य को परेशान करती हैं। और इसलिए इस बार हमने एक मिशन मोड में काम उठाया है- पशुओं में Foot to Mouth जो disease हैं, उस बीमारी से हिन्दुस्तान को मुक्त करना। यानी पशुओं की भी चिंता, उसको भी हम भूलें नहीं हैं।

मैंने वहाँ दूसरे स्तंभ की बात की। दूसरा स्तंभ यानी देश के सामान्य जन को उत्तम और सस्ता इलाज मिले, इसके लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

भाइयो और बहनों, इन दो स्तंभों को आयुष्मान भारत योजना बहुत मजबूती दे रही है। चाहे वो देशभर में डेढ़ लाख से अधिक Health and Wellness Centre का निर्माण हो या फिर हर वर्ष पाँच लाख रुपये तक के मुफ्त इलाज की सुविधा, आयुष्मान भारत ही की भूमिका अहम है।

साथियो, आयुष्मान भारत हमारे तीसरे स्तंभ यानी सप्लाई साइडकी मजबूती भी ठोस आधार बना रही है। आयुष्मान भारत से देश में स्वास्थ्य सेवाओं की demand में बढ़ोत्तरी हो रही है। अब वो गरीब मरीज भी अस्पताल पहुँच रहा है जो कभी इलाज के बारे में सोचता तक नहीं था। प्राइवेट अस्पतालों में तो इलाज की वो कल्पना तक नहीं कर सकता था। आज PM-JAY की सेवा देने वाले 18 हजार से अधिक अस्पतालों में से करीब 10 हजार, यानी ऐसे आधे से अधिक अस्पताल प्राइवेट सेक्टर में हैं। आने वाले समय में ये भागीदारी और बढ़ाने वाली है।

साथियो, जैसे-जैसे demand बढ़ रही है, वैसे-वैसे देश में छोटे शहरों में आधुनिक medical infrastructure का जाल बिछ रहा है। आने वाले समय में अनेक नए अस्पताल बनने वाले हैं। रोजगार के नए अवसर मिलने वाले हैं। एक अनुमान के अनुसार आने वाले पांच-सात वर्षों में सिर्फ आयुष्मान भारत योजना से पैदा हुई demand के कारण ही करीब 11 लाख नए रोजगार निर्मित होंगे। ये कितना बड़ा आँकड़ा है कि इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सिर्फ रेलवे ही इससे रोजगार का ज्यादा निर्माण करता है।

भाइयो और बहनों, रोजगार की इन संभावनाओं के लिए हमारे युवा साथियों को ट्रेड करना बहुत जरूरी है। यही कारण है कि Medical education से जुड़े infrastructure को विस्तार दिया जा रहा है और पॉलिसी में निरंतर सुधार किया जा रहा है। एक तरफ देश में Medical education में सीटों की संख्या बढ़ाई जा रही है, वहीं इनमें admission से लेकर regulation तक एक seamless और transparent व्यवस्था बनाई जा रही है। देशभर में 75 नए सरकारी मेडिकल कॉलेज बनाने का फैसला हो या देश में नए नेशनल मेडिकल कमीशन का निर्माण, इससे मेडिकल सेक्टर को निश्चित लाभ होने वाला है।

नेशनल मेडिकल कमीशन से देश में मेडिकल शिक्षा के विस्तार को गति मिलेगी, उसकी क्वालिटी में सुधार आएगा और corruption की शिकायतें दूर होंगी।

साथियो, आयुष्मान भारत योजना को भी User friendly बनाने के लिए, इसको Full proof बनाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। और मुझे बताया गया है कि इससे जुड़े आईटी सिस्टम को PM-JAY 2.0 के रूप में अपग्रेड किया गया है और इसमें निरंतर सुधार किया जा रहा है। आज जो app launch किया गया है, उससे लाभार्थियों को बहुत मदद मिलने वाली है। लेकिन साथियो इस योजना को अधिक सक्षम अधिक व्यापक बनाने के लिए हमें अभी और तकनीकी समाधानों की जरूरत है। आयुष्मान भारत के अलग-अलग components हैं, उनको आपस में जोड़ने के लिए एक प्रभावी और सुगम सिस्टम की जरूरत है। Health and Wellness centre से लेकर बड़े अस्पतालों के ऑपरेशन थिएटर तक, diagnosis, referral और follow up care का एक तकनीकी आधारित सिस्टम हमें विकसित करना है। हमें उस स्थिति की तरफ बढ़ना है जहाँ गांव के Health and Wellness Centre में दर्ज किसी भी व्यक्ति का Health Data उस व्यक्ति की बीमारी के diagnosis में काम आए। यही डेटा बड़े अस्पताल के लिए रैफरकरने पर आगे के इलाज के लिए प्रभावी भूमिका निभा सके। इसके लिए हम सबको सोचना होगा, नई पीढ़ी के लोगों को जोड़ना होगा।

साथियो, इसके लिए आज लॉन्च किया गया PM-JAY Startup Grand Challenge अहम भूमिका निभाने वाला है। और मैं देश की युवा शक्ति को, खास करके IT Professionals से आग्रह करूँगा कि ये मानवता का काम है, इस चैलेंज को आप ही उठा लीजिए, और आने वाले समय में आप एक उत्तम solution ले करके आइए। इसके माध्यम से देशभर में हेल्थ सेक्टर में काम करने वाले Start-ups को आयुष्मान भारत से जोड़ा जा रहा है। मैं देश के सभी युवा entrepreneurs को, innovators को इस अवसर का लाभ उठाने के लिए फिर से एक बार आमंत्रित करता हूँ।

भाइयो और बहनों, न्यू इंडिया का Health care system वाकई पूरी दुनिया के लिए एक मिसाल बनने वाला है। इसमें भी आयुष्मान भारत योजना का बहुत बड़ा योगदान होगा। देश के करोड़ों जनों को आयुष्मान बनाने की हमारी प्रतिबद्धता और मजबूत हो, हमारे हर प्रयास सफल हों। इसी कामना के साथ आप सभी का हृदय से बहुत-बहुत धन्यवाद, बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

\*\*\*\*\*

**आर.के.मीणा/आरएनएम/एएम –**

(रिलीज़ आईडी: 1586984) आगंतुक पटल : 386

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Punjabi , Bengali , Kannada , Assamese , English , Marathi , Tamil